باسمہٖ تعالیٰ

खास-खास फज़ीलतोंवाली

मस्नून दुआएं

हदीस शरीफ में आई हुई मस्नून दुआओं के अजीब अजीब फायदे

मुस्तनद किताबों के हवालों के साथ

जमा-तरतीब

मुफ्ती महमूद मौलाना सुलैमान बारडोल्वी साहब दा:ब.

जामीअह इस्लामियह डाभेल - सीमलक

नाशीर

जामीअह दारूल-एहसान बारडोली, व्यारा सोनगढ, नवापूर

किताब का नाम	खास–खास फज़ीलतोंवाली मस्नून दुआएं
जमा–तरतीब	मुफती महमूद मौलाना सुलैमान बारडोल्वी साहब दा.ब.
तअदाद	११००
टाइप सेटींग	मुफती मुहंमद अमीन उधना
तबए अव्वल	जमादिल आखर १४३१ हिजरी जुलाई २०१० इस्वी

किताब की तैयारी में मुआविन

(१) मुफती मुहंमद सअद हाफिज़ यहया आनंदी

उस्तादुत्तजवीद वलउलूमिल अरबियह, जामिअह रहमानियह खांभिया, आलीपूर

(२) मुफती मुहंमद नदीम मोल्वी नूर मुहंमद वेरावली

खादिम शोअबए दअवत वज़ारतुल अवकाफ बहरीन

नाशीर

जामेअह दारूल–एहसान बारडोली, सोनगढ, नवापूर

فہرس

	बिस्मिही तआला	
	पेशे खिदमत	
	पेश लफ्ज़	
	अमल छोटा सवाब बडा	
१	थोडी देर में बहोत ज़्यादह नेकी	
२	फरीश्तों का रहमत की दुआ देना और शहादत की मोत नसीब होना	
३	फकीरी ओर कब्र की गभाराहट से हिफाज़त और जन्नत और मालदारी हासिल होना	
४	जिस दुआ से खुद अल्लाह तआला बंदे को राज़ी करने की ज़िम्मेदारी लेवे।	
५	बहुत से फायदे वाला कलिमह	
६	सुब्ह शाम के दरमियान की कोताहियां मुआफ होने का वज़ीफा	
७	अल्लाह की मुहब्बत और अमल के तराज़ु में भारी	
८	पहाडों के बराबर अज्र	
९	एक लाख नेकियां	

	हिफाज़त के मुतअल्लिक दुआएं	
१०	आयतुल कुर्सी के खास फज़ाइल	
११	सुरए इखलास और मुअव्वज़तैन के फज़ाइल–फवाइद–पढने के अवकात और तरीका	
१२	हर बिमारी से शिफा के लिये	
१३	सोते वक्त पढने की तीन सुरतें	
	जिन्नात और जादू और हर शैतान से हिफाज़त के लिये दुआएं	
१४	जादु से हिफाज़त के मुफीद कलिमात	
१५	जिन्नात से हिफाज़त के लिये दुआ	
१६	शैतान के मक्र और शर से बचने के लिये	
	एकसिडन्ट और अचानक आनेवाली मुसीबत से हिफाज़त की दुआएं	
१७	अचानक आनेवाली मुसीबत और एकसीडन्ट वगैरह से हिफाज़त की दुआ	
१८	जान–माल और घरबारकी सलामती की दुआ	
	दुश्मनों और बलाओं से हिफाज़त	
१९	सुब्ह–शाम मांगने की दो मुबारक दुआएं	
	हर बुराइ हर तकलीफ से हिफाज़त	
२०	हर तकलीफ से अमान पाने की दुआ	

२१	आयतुल कुर्सी और सुरए मुअमिन की चंद आयतोंकी फज़ीलत	
२२	हिफाज़त के लीये हज़. अनस रदि. की खास दुआ	
	हर किस्म के गम और दुश्मन से हिफाज़त	
२३	गम और कर्ज़ से छुटकारा पानेका मुजर्रब वज़ीफा	
	अल्लाह तआला गम को खुशी से बदल दे	
२४	अल्लाहतआला गम को खुशीयों से बदल देवे	
२५	बुरा बुढापा,बखीली,बुज़दिली दुनिया के फित्ने और अज़ाबे कब्र से हिफाज़त की एक जामेअ दुआ	
	औरतों और बच्चों के लिये खुसुसी हिफाज़त की दुआएं	
२६	औरतों और बच्चों के लीये हिफाज़त की दुआ	
२७	बच्चों को पनाह में देने के लीये पढे जानेवाले कलिमात	
	गुस्से से हिफाज़त	
२८	जब गुस्सा आए तो यह दुआ पढें	

२९	जब किसीको मुसीबत में देखे तो अपनी हिफाज़त के लिये यह दुआ पढे	
	शिर्क और दिखलावे से हिफाज़त	
३०	शिर्के अकबर (यअनी अल्लाह तआला के साथ किसीको शरीक करना) शिर्के असगर (यअनी रियाकारी, किसीको दिखाने के लिये अमल करना) दोनों से हिफाज़त की एक जामेअ दुआ	
	बिमारी या बदन में दर्द या गभराहट दुर करने के लीये खास खास दुआएं	
३१	गभराहट के वक्त पढने की दुआ	
३२	आंख की बिमारी की दुआ	
३३	सख्त बिमारी के वक्त पढने की आयत	
३४	हर किस्म के दर्द ओर बुखार की दुआ	
३५	बिमारी दूर करने के लिये	
	तंदुरस्ती और दीन दुनिया की आफियत और सलामती की दुआएं	
३६	तंदुरस्ती और आफियत के लिये	
३७	हिफाज़त और आफियत की खास दुआ	
३८	सुरए मुअमिनुन की आखरी आयत का अजीब फायदा	

हर किस्म की मुश्किलात में आसानी और बेचेनी दूर करने की दुआएं

३९	भारी से भारी काम में आसानी के लिये	
४०	मुश्किलात पर उबूर (काबु) हासिल करने का नुस्खा	
४१	इजतिमाइ–इन्फिरादी मुसीबतों के वक्त	
४२	तकलीफ और बेचेनी के वक्त पढने की दुआ	
४३	जो आदमी दुनिया के सब सहारों से मायुस हो गया हो उसके लिये एक जामेअ दुआ	
४४	हर काम आसान हो जावे	

नमाज़ से मुतअल्लिक पढने की खास खास दुआएं

४५	नमाज़ के बाद पढने की खास दुआ	
४६	फर्ज़ नमाज़ों के बाद की एक और दुआ	
४७	नमाज़ के बाद की खास दुआ	
४८	नमाज़ के बाद पढने का एक अमल	
४९	नमाज़ के बाद की अजीब फज़ीलत की दुआ	
५०	नमाज़ के बाद की दुआ	
५१	दो सजदों के दरमियान की दुआ	

५२	वित्र की नमाज़ के बाद पढने की दुआ	
५३	तहजजुद की नमाज़ को उठे तो यह दुआ पढे	
	अगर तुम चाहो के तुम्हारी दुआ कबूल हो जावे	
५४	अगर तुम चाहो के तुम्हारी दुआ कुबूल हो जाए	
५५	दुआ मांगने से पहले पढने की दुआ	
	रोज़ी में बरकत और कर्ज़ की अदायगी ओर फकीरी और मोहताजी से हिफाज़त की दुआएं	
५६	कर्ज़ की अदायगी के लिये	
५७	सुब्ह के वक्त यासीन शरीफ पढने का फायदा	
५८	गम और कर्ज़ से छुटकारा पानेका मुजर्रब वज़ीफा	
५९	रोज़ी में बरकत और ज़ियादती	
६०	जिस दुआ पढने से पहाड बराबर कर्ज़ हो तो भी अदा हो जाएगा	
६१	मालदारी हासिल करने के लिये	
६२	रोज़ी में बरकत के लिये	
६२	फकीरी और मोहताजी से हिफाज़त के लिये	
	सुब्ह-शाम की कुछ खास दुआएं	
६३	इस्तिगफार का सरदार	

६४	सुब्ह शाम पढने की एक खास दुआ	
६५	दिन ओर रात की नेअमतों का शुक्रियह अदा करने की दुआ	
६६	इस्तिगफार का खास फायदा	
६७	सुब्हानल्लाह-अल्हम्दुलिल्लाह-लाइलाह इल्लल्लाह- अल्लाहु अकबर १०० मरतबह पढने का सवाब	
	सोने के वक्त की दुआएं और आअमाल	
६८	सोते वक्त का पेहला अमल	
६९	दूसरा अमल	
७०	तीसरा अमल	
७१	चौथा अमल	
७२	पांचवा अमल	
७३	छठ्ठा अमल	
७४	बहुत परेशानी और रात को नींद न आने के वक्त पढने की दुआ	
७५	नींद में बेचैनी और गभराहट की दुआ	
७६	अच्छा या बुरा ख्वाब देखे तो यह अमल करे	
७७	नींद के लिये बेहतरीन दुआ	

जहन्नम की आग, अज़ाबे कब्र और कुफ्र से हिफाज़त की दुआएं

७८	जहन्नम से छुटकारे का वज़ीफा
७९	जहन्नम से छुटकारे की दुआ
८०	अज़ाबे कब्रसे हिफाज़त के लीये एक दुआ
८१	कुफ्र मोहताजी ओर अज़ाबे कब्र से पनाह मांगने की दुआ
८२	अज़ाबे कब्र से हिफाज़त के लिये एक दुआ
	कुछ खास खास दुआएं
८३	हज़. मुसा अल. की दुआ
८४	तमाम मकासिद के शुरू में यह दुआ पढे
८५	कयामत के रोज़ हुज़ूर ﷺ की शफाअत नसीब होगी
८६	दुश्मन की नज़र से छुपे रेहने का एक अमल
८७	जब बच्चा बोलना सीखे तो उसको सबसे पहले क्या याद करावे?
८८	कअबह के परदों से चिमट कर मांगने की दुआ
८९	खुशी के मौके की दुआ और नापसंदीदह चीज़ के वक्त की दुआ
९०	खटमल-पिस्सु-मख्खी-बिच्छु से हिफाज़त की दुआ

९१	एक खास दुआ जिसके पढने का घरवालों को पाबंद बनाने का खुद हुज़ूर صلى الله عليه وسلم ने हुकम दिया	
९२	हर मजलिस के आखिर में पढने की दुआ	

रात–दिन पेश आनेवाली जरूरियात से मुतअल्लिक मस्नून दुआएं

१	सोकर उठने की दुआ	
२	बयतुलखला जाते वक्त की दुआ	
३	बयतुलखला से निकलते वक्त की दुआ	
४	सुब्ह के वक्त की दुआ	
५	सुरज निकलते वक्तकी दुआ	
६	कपडे पहेनते वक्त की दुआ	
७	नया कपडा पहेनते वक्त	
८	कपडे निकालते वक्तकी दुआ	
९	शाम हो तब पढने की दुआ	
१०	वुज़ु शुरूअ करते वक्त की दुआ	
११	वुज़ू के दरमियान की दुआ	

१२	वुज़ु के बाद की दुआ	
१३	वुज़ू के बाद की एक और दुआ	
१४	मस्जिद में दाखील होनेकी दुआ	
१५	मस्जिद से निकलते वक्त	
१६	अज़ान के वक्तकी दुआ	
१७	मगरिब की अज़ान के वक्त	
१८	अज़ान के बाद पढने की दुआ	
१९	सना:	
२०	अत्तहिय्यात:	
२१	दुरूद शरीफ	
२२	दुरूद शरीफ के बाद की दुआ:	
२३	दुआए कुनुत:	
२४	फर्ज़ नमाज़ों के बाद की दुआ	
२५	फर्ज़ नमाज़ों के बाद की एक और दुआ	
२६	घर में दाखील होते वक्त की दुआ	
२७	घर से निकलने की दुआ	
२८	घर से निकलते वक्त की एक और दुआ	
२९	खाना खाने से पेहले	
३०	खाना खाने से पहले की दूसरी दुआ	
३१	खाना खाने के बाद	

३२	खाना खाने के बाद की एक और दुआ	
३३	खाना खाने के बाद की एक और दुआ	
३४	पानी पीने के बाद की दुआ	
३५	दस्तरख्वान उठाते वक्त की दुआ	
३६	दुध पीने के बाद की दुआ	
३७	आइना देखते वक्त की दुआ	
३८	सफरमें जाते वक्त और लोटते वक्तकी दुआ	
३९	कीसी शहरमें दाखील हो तब	
४०	जब मुसीबत पहोंचे	
४१	जब छींक आवे	
४२	सोते वक्त पढने की मस्नुन दुआ	
४३	सोते वक्त पढने की एक और दुआ	
४४	सोते वक्त पढने की एक और दुआ	
४५	बाज़ार में दाखील होने की दुआ	
४६	खाना शुरूअ करते वक्त बिस्मील्लाह भुल जाये तो यह दुआ पढे	
४७	दअवत खा कर यह दुआ पढे	
४८	इफतार के वक्त की दुआ	
४९	किसीके यहां इफतार के वक्त पढने की दुआ	

५०	मोसम का नया फल देखने के वक्त पढने की दुआ	
५१	मरीज़ की इयादत के वक्त पढने की दुआ	
५२	मरीज़ की इयादत के वक्त पढने की एक और दुआ	
५३	नया चांद देखे	
५४	रजब का चांद देखने के वक्त की दुआ	
५५	बारिश के वक्तकी दुआ	
५६	जब बादल गरजे	
५७	बिजली से हीफाज़त की दुआ	
५८	अगर बारिश न होती हो	
५९	जब अपनी बस्तीमें बारिश बहुत ज्यादा हो जावे और करीबकी बस्तीयोंमें बारिश न होती हो।	
६०	जब किसीको रूख्सत करे तो यह दुआ पढे	

बिस्मीोही तआला

इस किताब के बारे में अल्लाह तआला का फज़्ल

अल्लाह तआला के फज़्लो करम से "खास–खास फज़ीलतोंवाली मस्नुन दुआएं" गुजराती ज़बान में चार मरतबह छपी, हर मरतबह कुछ दुआएं बढाइ गईं। फिर हिन्दी–उर्दु में छप कर मकबूल हुई। उसमें से बाज़ दुआओं का इन्तिखाब कर के अंग्रेजी ज़बान में दो एडीशन छपे। यह अल्लाह तआला का फज़्लो करम हे। फिर मकतब के निसाब के लिये रोज़ाना की जरूरियात के मुतअल्लिक मस्नुन दुआएं जमा की गई जिसके दो एडीशन छप गये। इस मरतबा में दोनों तरह की मस्नून दुआओं को जमा करके और उसमें कुछ दुआएं ज्यादा करके आपकी खिदमत में पेश किया जा रहा हे। वैसे दोनों किताबें अलग अलग मुख्तलिफ ज़बानो में भी छप छुकी हें। जो जेब में रखने की साइज़ की है, जिसको आप हासिल कर सकते है। अल्लाह तआला अपने फज़्ल से कबूल फरमाए। आमीन।

–: उलमाए किराम और मसाजिद के इमामों से खास दरख्वास्त :–

मस्नून दुआओं की अहादीसे पाक सीखने सीखाने का आसान तरीका:

रोज़ानह या हफते में किसी दिन फजर की नमाज़ के बाद या किसी और नमाज़ में फर्ज़ से फारिग हो कर फोरन पांच या दस मिनट का वक्त दुआएं सीखनें के लिये फारिग करें। मुसलमान भाईओं को समज़ावे के यह मस्नून दुआएं हज़रत नबीये पाक सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम के मुबारक अल्फाज़ है। और उसमें बहोत सारे फायदे है।

फिर एक एक दुआ तरतीब से एक दिन में सुनावे। पहले दुआ की फज़ीलत सुनावे। फिर खुद ठहर ठहर कर साफ साफ उंची आवाज़ से दुआ पढे। और तमाम हाज़िरीन से पढाते जावे। जो दुआ हदीसे पाक में जितनी मरतबह पढने का हुकम आया हे वह दुआ उतनी मरतबह उसी वक्त मजलिस में पढा देवे। या सीखाने–याद कराने की निय्यत से तीन मरतबह पढावे। फिर दूसरे रोज़ उसको पहले दोहरा लिया जावे। हो सके तो सिखाई हुई दुआ को अलग परचे में झेर्राक्स कर के मकामी ज़बान में तकसीम कर देवे। मस्जिद के बोर्ड पर लिख देवे। या यह किताब सबको तकसीम कर दी जावे। और एक एक हदीस तरतीब से याद करावे। इन्शाअल्लाह बहोत ही फायदा होगा। दुनिया के बहोत सारे मुल्कों के सफर में इस तरह बहोत ही कामियाब तजर्बा हासिल हुवा है।

–: पेशे खिदमत :–

महज़ अल्लाह तआला के फज़्ल से यह मस्नून दुआएं जो मुरत्तब हुई उसको तमाम जहांनो के लिये रहमतों वाले

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम

की खिदमते आली में पेश करता हुं।

–: इस उम्मीद के साथ :–

(१) उनके मुकद्दस शहेर में कयामत तक सोना नसीब हो जावे।
(२) कब्र–बरज़ख में उनके मुस्कुराते हुवे नुरानी चेहरए अनवर की ज़ियारत नसीब हो जाये।
(३) कयामत के रोज़ उनके गुलामों में मेरा शुमार हो जाये।
(४) मेदाने मेहशर में उनके नुरानी हाथों से जामे कवसर नसीब हो जाये।
(५) उनके साथ अल्लाह के अर्श के साये में जगह नसीब हो जाये।
(६) उनकी शफाअत इस गुनेहगार बंदे के हक में कुबूल हो जाये।
(७) उनके तुफैल से अल्लाह का फज़्ल नसीब हो जाये।
(८) उनकी चादर मुबारक के साये में जन्नतुल फिरदौस में अव्वलीन दाखलह नसीब हो जाये।

उम्मीदे खल्अते शाही न दारम
ब सर दारम ज़ तू दागे गुलामी

अय अल्लाह इस दुआ–उम्मीद को मेरे असातिज़ह–वालिदैन, अहलो अयाल, तलामिज़ह, मुतअल्लिकीन और पूरी उम्मत के हक में कबूल फरमाइए।

पेश लफ़्ज़

बिस्मिही तआला

हज़. मुहंमद ﷺ तमाम इन्सानों के लिये रहमत बन कर तशरीफ लाए, आपने दिन–रात में पेश आनेवाली ज़रूरतों के मोके पर दुआएं पढी, यह मस्नून दुआ बहोत ज्यादा खैर, रहमत, बरकत का ज़रिया है। हर दुआ के तर्जुमे को देखें तो उसमें नसीहत और सीखनें की बातें भी है, आज के फित्ने के ज़माने में हिफाज़त, आफियत हासिल करने के लिये यह दुआ पाबंदी से पढना चाहिये।

अलग–अलग मोके और ज़रूरियात की दुआ पढने का एक खास फायदा यह है के उसकी वजह से अल्लाह के ज़िक्र में याद में मश्गूल रेहने की फज़ीलत हासिल होती है। इन दुआओं को पढने से हुज़ूर नबीए करीम ﷺ से मुहब्बत और ईश्क भी ज्यादा होगा। और यह चीज़ कयामत में हुज़ूर ﷺ की शफाअत हासिल करनें का ज़रिया बनेंगी।

:जरूरी हिदायत:

(१) तमाम मुसलमान आसानी से पाबंदी कर सकें, इस लिये रोज़ाना की खास खास जरूरियात की दुआएं जमा की है।

(२) ज्यादा तर सहीह अहादीस को जमा करने की पूरी कोशिश की गई है।

(३) मकतब–स्कूल के बच्चों को हर हफते एक या दो दुआ इनकी ताकत के मुताबिक याद कराई जावे, और बार बार दौर कराया जावे।

(४) मां–बाप, असातिज़ह को चाहिये के मोके–मोके पर जैसे सुब्ह उठे, खाना खाने बेठें कुछ मुद्दत ज़ोर से दुआ पढाने की पाबंदी करें, ताके दुआ पढने की आदत हो जावे।

(५) बालिग–जवान हर एक मर्द–औरत याद करने की कोशिश करें, और जब तक याद न हो वहां तक किताब अपने साथ ही रख्खें।

–यह खज़ानह है अपने साथ में रखनें का।

और जब भी कोई ज़रूरत पेश आवे किताब खोल कर उसकी दुआ पढ लेवे। थोडे दिन पाबंदी

करने से दुआ भी याद हो जाएगी और इन्शाअल्लाह आदत भी बन जाएगी।

(६) किसी भाइ को कोइ गलती नज़र आए, हमको खबर फरमाएं, ताके उसकी इस्लाह हो जावे।

हक तआला हम सबको सुन्नतों की पाबंदी अता फरमावे और कयामत में हुज़ूर ﷺ के मुबारक हाथ से हौज़े कवसर का पानी पीना नसीब फरमावे। उनकी शफाअत की बरकत से अल्लाह हम सबको अपनी रज़ा, मुहब्बत, जन्नतुल फिरदौस अता फरमावे। आमीन। या रब्बल आलमीन

महमूद बारडोल्वी

जामिअह इस्लामियह डाभेल, सिमलक

अमल छोटा सवाब बडा

﴾१﴿ थोडी देर में बहोत ज्यादा नेकी

سُبْحَانَ اللّٰہِ وَ بِحَمْدِہٖ، عَدَدَ خَلْقِہٖ، وَ رِضَا نَفْسِہٖ، وَ زِنَۃَ عَرْشِہٖ، وَ مِدَادَ کَلِمَاتِہٖ.

(तीन मरतबह सुब्ह)

(मुस्नदे अहमद कुछ फर्क के साथ १/५८१ ह.नं. ३२९८)

फज़ीलत: उम्मुल मुअमिनीन हज़रत जुवयरियह रदि. इर्शाद फरमाती है के एक मरतबह हुज़ुर ﷺ सुब्ह की नमाज़ के वक्त, जब के वह (यअनी हज़रत जुवयरीया रदि.) अपने मुसल्ले पर थीं, (ज़िक्रो दुआ में मश्गूल थीं) उनके यहां से निकल कर गये फिर चाश्त के बाद लोटे और हज़रत जुवयरीया रदि. अभी तक उसी हालत पर बेठी थीं, हुज़ुर ﷺ ने पुछा:

तू अभी तक इसी हालत पर है, जिस हालत पर मैंने तुझे छोडा था?

(अपनी जगह से उठी नहीं?)

उन्होने कहा: जी हां। में इसी हालत पर हुं।

हुज़ुर ﷺ ने फरमाया मैंने तुझ से जुदा होने के

बाद चार कलिमात तीन मरतबह कहे, अगर इन को उन तमाम कलिमात के साथ जो तुने आज कहे है वज़न कर दीया जाए तो वह चार कलिमात (जो उपर लीखे है) उन पर गालिब हो जाएं। (मिश्कात १/२००)

﴾२﴿ फरीश्तों का रहमत की दुआ देना और शहादत की मोत नसीब होना

आगेवाली आयतें लिखे हुवे तरीके से सुब्ह के वक्त जो आदमी पढेगा तो सत्तर हजार फरीश्ते उसको शाम तक रहमत की दुआ देते रेहते है। और अगर उस दीन में उसका इन्तेकाल हो गया तो उसे शहादत का दर्जा मीलता है और जो शख्स यह दुआ और आयतें इसी तरह शाम के वक्त पढे तो उस के लिये भी (सुब्ह तक) यही दरजा है।

أَعُوذُ بِاللّٰهِ السَّمِيعِ الْعَلِيمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ.

(तीन मरतबह)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ .

١ـ هُوَ اللّٰهُ الَّذِي لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ج عَالِمُ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ ج هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيمُ .

٢ـ هُوَ اللّٰهُ الَّذِي لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ج اَلْمَلِكُ

الْقُدُّوسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ

الْمُتَكَبِّرُ ج سُبْحَانَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ٥

٣ـ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَآءُ

الْحُسْنٰى ط يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْأَرْضِ وَ

هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ٥ (सूरए हश्र: २२,२३,२४)

(तिरमिज़ी: २/१२०)

ये अमल सुब्ह–शाम दोनों वक्त पढ लें।

﴾३﴿ फकीरी ओर कब्र की गभराहट से हिफाज़त और जन्नत और मालदारी हासिल होना

हदीसे पाकमें आता है जो शख्स रोज़ाना सौ मरतबह यह दुआ पढे।

لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ الْمُبِينُ.

तो मोहताजी से महफुज़ रहेगा और कब्र की वहशत में उन्स हासिल होगा ओर इसके ज़रीये मालदारी भी हासिल करेगा ओर जन्नत का दरवाज़ा खिटखिटाएगा। (यअनी पहोंच जाएगा)

फज़्ल बीन गानिम ने फरमाया अगर इन्सान इस हदीस के लीये खुरासान यअनी (काफी लंबी मसाफत)

का भी सफर कर डाले तो वह भी कम है।

(कन्ज़ुलउम्माल ह.नं.३८९६ २/२३३)

﴾४﴿ जिस दुआ से खुद अल्लाह तआला बंदे को राज़ी करने की ज़िम्मेदारी लेते है।

जिस दुआ से खुद अल्लाह तआला बंदोको कयामत में राज़ी करनेकी ज़िम्मेदारी लेते है वह यह है।

رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّ بِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَّ بِمُحَمَّدٍ نَبِيًّا وَّ رَسُوْلًا.

हज़. सवबान रदि. फरमाते है के रसुलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया जो मुसलमान बंदा सुब्ह-शाम तीन मरतबह उपर के कलीमात पढे, तो (कयामत के दीन) उसको राज़ी करने की ज़िम्मेदारी अल्लाह तआला लेंगे। (तिरमिज़ी : २/१७६, इब्ने माजह: २८४)

﴾५﴿ बहुत से फायदे वाला कलिमह

لَآ اِلٰــهَ اِلَّا اللّٰــهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ

وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ.

हदीस में है के जो शख्स सुब्ह के वक्त यह कलीमात कहे तो,

१. उसे हज़रत इस्माईल अल. की अवलादमें से एक गुलाम आज़ाद करनेका सवाब मीलता है।

२. उसके लीये दस (१०) नेकीयां लीखी जाती है।

३. उसके दस (१०) गुनाह मुआफ होते है।
४. उसके दस (१०) दर्जे बुलंद होते है।
५. वह शाम तक शयतान की शरारत से महफुज़ रहता है। और जो शख्स यह कलीमात शामको मगरिब के बाद कहे तो सुब्ह तक उसके लीये ऐसाही होता है।

(अबुदावुद: २/६९२)

*** इस सिलसिले में एक दूसरी रिवायत यह है**

لَآ إِلٰـهَ إِلَّا اللّٰـهُ وَحْـدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِ وَيُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ.

हदीस में है जो शख्स फर्ज़ नमाज़ के बाद किसीसे बात किये बगैर नमाज़ ही की हालत में बेठ कर (यअनी कायदे में बेठते हें इस तरह) अपनी जगह से उठने से पहले यह कलिमात दस मरतबह कहे तो,

(१) उसके लिये दस नेकियां लिखी जाती है।
(२) दस गुनाह मुआफ होते है।
(३) दस दर्जे बुलंद होते है।
(४) वह पुरा दिन हर तकलीफ और हर आफत और शैतान की शरारत से महफूज़ रहता है।
(५) और उस दिन में गुनाहों से महफूज़ रहेगा। मगर यह के अल्लाह के साथ शिर्क करे।

(तिरमिज़ी: २/१८५)

नोट: एक रिवायत में दस गुलाम आज़ाद करने का सवाब भी आया है, और उस दिन में यह कलिमात पढनेवाले के लिये तस्बीह यअनी दुआ करते रहेंगे।

(मजमउज़्ज़वाइद: १०/११२)

इन कलिमात को सुब्ह और शाम १० मरतबह पढ लेना चाहिये।

(६) सुब्ह–शाम के दरमियान की कोताहियां मुआफ होने का वज़ीफा

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ۝ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَ حِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ۝ وَ لَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْأَرْضِ وَ عَشِيًّا وَّ حِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ۝ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَ يُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَ يُحْيِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَ كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ۝

(सुरए रूम–२९)

फज़ीलत: हदीस में है के जो शख्स यह आयात सुब्ह के वक्त पढ लेवे तो उसकी दिनकी कोताहियों की तलाफी हो जाएगी और जो शामको यह आयात पढे उसकी रातभर की कोताहियों की तलाफी हो जाएगी।

(अबु दावुद: २/६९२)

नोटः कोताहियों की मुआफी का एक मतलब यह है के जो अवराद (यअनी मअमूलात) छूट गए हों उसकी तलाफी की भी उम्मीद है। (अवनुल मअबूदः १३/२८३)

﴾७﴿ अल्लाह की मुहब्बत और अमल के तराज़ु में भारी

سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ.

फज़ीलतः एक हदीस में है के जो शख्स इस कलिमह को सुब्ह में सौ मरतबह और शाम में सौ मरतबह पढे तो इसके इस अमल की बराबरी मख्लुक में से कोई भी नहीं कर पाएगा। (अबुदाउदः २/६९४) अगर इस कलिमह के बाद سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ बढा कर पुरा कलिमह...

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ.

पढे तो और ज्यादा बेहतर है।

(फत्हुलबारीः १३/५४२ मत्बूआ दारूल मआरिफ बैरूत)

कयुंके एक हदीस में है के यह दोनों कलिमात अल्लाह तआला को बहुत महबुब है। और अमल तोलने के तराज़ु में उनका बहुत वज़न है, (बुखारी शरीफः २/११२८) यह दोनों कलिमात बहुत ही मुख्तसर और बहुत फज़ीलतवाले है। फज्र और अस्र के बाद या रात को सोने से पहले और उठने के बाद सौ

मरतबह ज़रूर पढ लें, इससे अल्लाह तआला की मुहब्बत में इज़ाफह होगा, गुनाहों से बचना आसान होगा।

﴾٨﴿ पहाडों के बराबर अज्र

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ۞ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۞

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَداً وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِيْ الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْراً.

जो आदमी यह आयत पढेगा उसके लिये अल्लाह तआला ज़मीन और पहाडों के बराबर अज्र लिखेगा। (कुरतुबी: १०/३४५)

﴾٩﴿ एक लाख नेकियां

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ تَوَاضَعَ كُلُّ شَيْءٍ لِعَظَمَتِهٖ ، وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ ذَلَّ كُلُّ شَيْءٍ لِعِزَّتِهٖ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ أَخْضَعَ كُلُّ شَيْءٍ لِمُلْكِهٖ.

जो शख्स इसको सुब्ह के वक्त पढे उसके लिये एक लाख नेकियां लिखी जाएगी और अगर इन्तेकाल

हो जाए तो उसकी रूह को सब्ज़ परिन्दों की शकल में जन्नत में आज़ाद छोड दिया जाएगा जहां चाहे फिरे।

(अददुआअ, तबरानी: ३२५)

••••••••••••••*

हिफाज़त के मुतअल्लिक दुआएं

﴾१०﴿ आयतुल कुर्सी के खास फज़ाइल

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ۝ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اَللّٰهُ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا هُوَ ج اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ج لَا تَأْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ط لَـهٗ مَـا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ ط مَـنْ ذَا الَّـذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ط يَـعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْـدِيْهِـمْ وَ مَا خَلْفَهُمْ ج وَ لَا يُـحِيْـطُوْنَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْـمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ ج وَسِـعَ كُـرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ ج وَ لَا يَـئُـوْدُهٗ حِـفْظُهُـمَـا ج وَ هُـوَ الْـعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ۝

यह आयत कुर्आने करीमकी अज़ीम तरीन आयत है। अहादीस में उसके बडे फज़ाइल व बरकात मज़कुर है। मुस्नदे अहमद की रिवायत में है के रसुलुल्लाह ﷺ ने इसे सब आयतसे अफज़ल फरमाया है और एक दुसरी रिवायत में है के रसुलुल्लाह ﷺ ने हज़रत उबय इब्ने कअब रदि. से दरयाफत किया के

कुर्आन मे कोनसी आयत सबसे अज़ीम (बडी) है?

हज़रत उबय इब्ने कअब रदि.ने अर्ज़ कीया:

आयतुल कुर्सी।

नबीए करीम ﷺ ने उनकी तस्दीक करते हुए फरमाया:

ए अबुल मुन्ज़िर तुम्हें इल्म मुबारक हो।

(एक हदीस में है के) हज़रत अबूज़र रदि. ने नबीए करीम ﷺ से दरयाफत किया:

या रसुलल्लाह ﷺ ! कुर्आन में अज़ीमतर आयत कौनसी है?

फरमाया: आयतुल कुर्सी।

(इब्ने कसीर, अन अहमद फिल मुस्नद)

हज़रत अबू हुरयरह रदि. फरमाते है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया सूरए बकरह में एक आयत है जो कुर्आनी आयतों की सरदार है, वह जिस घर में पढी जावे शैतान वहां से निकल जाता है।

नसइ शरीफ की एक रिवायत में है के

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया जो शख्स हर फर्ज़ नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी पढा करे तो उसको जन्नत में दाखिल होने के लिए सिवाये मौत के दूसरी कोई रूकावट नहीं है। यअनी मौत के बाद फौरन वह जन्नत के आसार और राहत व आराम का मुशाहदा करने लगेगा। (सहीह इब्नुस्सुन्नी : १२४, मआरिफुल कुर्आन १/६१२)

एक हदीस शरीफ में हुज़ूर ﷺ का इर्शाद है जो शख्स फर्ज़ नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी पढेगा वह दूसरी नमाज़ के आने तक खुदा की हिफाज़त में रहेगा।

(मजमउज़्ज़वाइद: २/१४८)

इन अहादीस से मअलूम हुवा के आयतुल कुर्सी को हर फर्ज़ नमाज़ के बाद पढ लेना चाहिये। और दिन रात में किसी एक वक्त घर में भी पढ लेना चाहिये, अच्छा यह है के सोते वक्त आयतुल कुर्सी पढ लेवे।

﴾११﴿ सूरए इख्लास (कुल हुवल्लाह) और मुअव्वज़तैन (कुल अउज़ु बिरब्बील फलक और कुल अउज़ु बिरब्बिन्नास) के फज़ाइल–फवाइद–पढने के अवकात और तरीका

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ۝ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ ۝ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُ كُفُوًا أَحَدٌ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ قُلْ أَعُوْذُبِرَبِّ الفَلَقِ ۝ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۝ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِيْ العُقَدِ ۝ وَ مِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ قُلْ أَعُوْذُبِرَبِّ النَّاسِ ۝ مَلِكِ النَّاسِ ۝ إِلٰهِ النَّاسِ ۝ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝ الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِالنَّاسِ مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ۝

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने हबीब रदि. से रिवायत है के एक रात को बारिश और सख्त अंधेरा था। हम रसूलुल्लाह ﷺ को तलाश करने के लिए निकले। जब आपको पा लिया तो आपने फरमाया:

के कहो,

मैंने अर्ज़ किया क्या कहुं,

आपने फरमाया قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَد और मुअव्वज़तैन यअनी قُلْ أَعُوْذُ قُلْ أَعُوْذُ بِرَبِّ الفَلَقِ और بِرَبِّ النَّاسِ पढो। जब सुब्ह हो और जब शाम हो, तीन तीन मरतबह पढना तुम्हारे लिए हर तकलीफ से अमान होगा। (मआरिफुल कुर्आन ८/८४८)

﴾१२﴿ हर बिमारी से शिफा के लीये

हज़. आइशा रदि. फरमाती है के रसुलुल्लाह ﷺ को जब कोई बीमारी पेश आती तो यह दोनों सुरतें (कुल अउज़ु बिरब्बील फलक और कुल अउज़ु बिरब्बीन्नास) पढ कर अपनें हाथों पर दम कर के सारे बदन पर फेर लेते थे। और फिर जब मरज़े वफात (यअनी जिस बिमारी में वफात हो) में आपकी तकलीफ बढी तो में यह सुरतें पढ कर आपके हाथों पर दम कर देती थी। आप अपने तमाम बदन पर फेर लेते थे। में यह काम इस लीये करतीथी के हज़रत के मुबारक हाथोंका बदल मेरे हाथ नहीं हो सकते थे।

(मुअत्ता मालीक : पेजनं. ३७५)

﴾१३﴿ सोते वक्त पढने की तीन सूरतें

जब आप ﷺ बिस्तर पर सोने तशरीफ लाते तो रोज़ाना रातको आपका मअमुल था के उपरवाली (यअनी तीनों) सूरतों को पढकर अपनें दोनों हाथ पर दम कर के पुरे बदन पर जीतना हो सके फेरते और इब्तीदा चेहरे और सर और सामनेवाले बदन के हिस्से से फरमाते इस तरह तीन मरतबह करते।

(बुखारी : २/७५०)

यअनी: एक मरतबह यह तीनों सुरतें पढ कर अपने बदन पर दम करे, फिर दुसरी मरतबह यह तीनों सुरतें

पढे और अपने बदन पर दम करे, और तीसरी मरतबह यह तीनों सुरतें पढ कर अपने पुरे बदन पर दम करे।

(मज़ाहिरे हक)

मुस्तनद अहादीस में इन दोनो (यअनी कुल अउज़ु बीरब्बील फलक और कुल अउज़ु बी रब्बीन्नास) सुरतों के फज़ाइल और बरकात मन्कूल है। सहीह मुस्लिम में हज़रत उकबह इब्ने आमिर रदि. की हदीस है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया के तुम्हें कुछ खबर है आज की रात अल्लाह तआलाने मुझ पर ऐसी आयतें नाज़ील फरमाई के उनकी मसल (मिसाल) नहीं देखी।

और एक रिवायत में है के तौरात, इन्जील ओर ज़बूर और कुर्आन में भी इन जेसी कोई दूसरी सूरत नहीं है। एक दुसरी रिवायत इन्हीं हज़रत उकबह रदि. से है के एक सफर में रसूलुल्लाह ﷺ ने मुअव्वज़तैन मेरे सामने पढी, और फिर मगरिब की नमाज़ में इन्हीं दोनों सूरतों की तिलावत फरमाई। और फिर फरमाया इन सूरतों को सोते वक्त भी पढ लिया करो और उठने के वक्त भी।

(नसइ, इब्नुस्सुन्नी: ७५९, मआरिफुल कुर्आन: ८/८४७)

इन अहादीस से मअलूम हुवा के इन तीनों सूरतों को सुब्ह–शाम तीन–तीन मरतबह पढ लेना चाहिये।

और रात सोते वक्त भी हदीस में आये हुवे तरीके के मुताबिक तीनों सुरतों को पढ कर पूरे बदन पर दम कर लेना चाहिये। दम की इब्तिदा चेहरे और सामने की तरफ से करे।

और बिमारीयों के मोके पर कुल अउज़ु बिरब्बिल फलक और कुल अउज़ु बिरब्बिन्नास को पढ कर अपने उपर दम करते रहे। और सुब्ह में उठते वक्त भी इन दोनों सुरतों को पढ लेवे। और एक हदीस शरीफ से मअलूम होता है के हर फर्ज़ नमाज़ के बाद इन दोनों सुरतों को पढ लेना चाहिये।

(अबूदावुद और नसइ के हवालह से मआरिफुल कुर्आन ८/८४७)

जिन्नात और जादू और हर शैतान से हिफाज़त के लिये दुआएं

(१४) जादु से हिफाज़त के मुफीद कलिमात

أَعُوْذُ بِوَجْهِ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ الَّذِيْ لَيْسَ شَيْءٌ أَعْظَمَ مِنْهُ، وَ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ الَّتِي لَا يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَّ لَا فَاجِرٌ، وَ بِأَسْمَاءِ اللّٰهِ الْحُسْنٰى كُلِّهَا مَا عَلِمْتُ

مِنۡهَا وَ مَا لَمۡ أَعۡلَمۡ مِنۡ شَرِّ مَا خَلَقَ وَ بَرَءَ وَ ذَرَءَ.

(अलमुअत्ता ह.नं. १९१०, ४/४०९)

फज़ीलत: हज़रत कअबे अहबार रदि.से रिवायत है के अगर चंद कलिमात का में विर्द न रखता तो यहुद मुझे (जादु के ज़ोर से) गधा बना देते। इस लीये जादू से हिफाज़त के लीये पढते रेहना चाहीए।

﴾१५﴿ जिन्नात से हिफाज़त के लीये दुआ

أَعُوۡذُ بِوَجۡهِ اللّٰهِ الۡكَرِيۡمِ، وَ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ اللَّاتِيۡ لَا يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَّ لَا فَاجِرٌ، مِّنۡ شَرِّ مَا يَنۡزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَ شَرِّ مَا يَعۡرُجُ فِيۡهَا، وَ شَرِّ مَا ذَرَأَ فِي الۡأَرۡضِ وَ شَرِّ مَا يَخۡرُجُ مِنۡهَا، وَ مِنۡ فِتَنِ اللَّيۡلِ وَ النَّهَارِ وَ مِنۡ طَوَارِقِ اللَّيۡلِ وَ النَّهَارِ إِلَّا طَارِقًا يَّطۡرُقُ بِخَيۡرٍ يَّا رَحۡمٰنُ.

(अलमुअत्ता ह.नं. १९०८, ४/४०८)

एक खबीस जीन आगका शोअला (अंगारा) ले कर हुज़ुर ﷺ के पीछे लगा तो उसको दुर करने के लीये हज़रत जिब्रईल अ.स. ने उपरवाली दुआ सीखाइ।

(इख्तिसार के साथ बिल्मअना)

नीज़ आयतुल कुर्सी के फज़ाइल में यह भी गुज़र

चुका के जिस घरमें आयतुल कुर्सी पढी जावे शैतान वहां से निकल जाता है।

﴾१६﴿ शैतान के मक्र और शर से बचने के लिये

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ۝ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

وَقُلْ رَّبِّ أَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ وَأَعُوْذُ بِكَ رَبِّ أَنْ يَّحْضُرُوْنَ.

फज़ीलतः यह दुआ अपने मअना के ए'तेबार से शैतान के शर और मक्र से बचने के लिये एक जामेअ दुआ है। रसूलुल्लाह ﷺ ने मुसलमानों को यह दुआ तलकीन फरमाई है। ताके गैज़ व गुस्से की हालत में जब अपने उपर काबू नहीं रहता और शैतान के हम्ज़ का दखल हो जाता है तो ऐसी हालत से इन्सान महफूज़ रहे। उसके अलावह शयातीन और जिन्नात के दूसरे आसार और हमलों से बचने के लिये भी यह दुआ मुजर्रब है। (मआरिफुल कुर्आनः ६/३३० इख्तिसार के साथ ; कुरतुबीः १२/१४८)

नोटः सुरए इख्लास यअनी कुल हुवल्लाह, सूरए फलक यअनी कुल अउज़ू बिरब्बिल फलक और सूरए नास यअनी कुल अउज़ु बिरब्बीन्नास इससे भी जिन्नात और जादु से हिफाज़त होती है। लिहाज़ा इन तीनों सूरतों को सुब्ह–शाम तीन–तीन मरतबह पढ लेना चाहिये।

और रात सोते वक्त भी हदीस में आये हुवे तरीके के मुताबिक तीनों सुरतों को पढ कर पूरे बदन पर दम कर लेना चाहिये। दम की इब्तिदा चेहरे और सामने की तरफ से करे। और सुब्ह उठते वक्त और हर फर्ज़ नमाज़ के बाद भी कुल अउज़ु बिरब्बिल फलक और कुल अउज़ु बिरब्बिन्नास को पढ लेवे।

इसी तरह हर फर्ज़ नमाज़ के बाद और रात को सोते वक्त आयतुल कुर्सी भी पढ लेनी चाहिये।

नोटः शैतान से हिफाज़त के लिये मुफीद कलिमात पेज नं.१९ दुआ नंः ५ पर गुज़रे हें, उसको भी पढना चाहिये।

एकसिडन्ट और अचानक आनेवाली मुसीबत से हिफाज़त की दुआएं

(१७)

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ.

हज़. अबान इब्ने उस्मान रह. हज़रत उस्माने गनी रदि. से रिवायत करते हे के....

जो शख्स रोज़ाना सुब्ह-शाम तीन मरतबह यह

दुआ पढेगा उसको कोई चीज़ तकलीफ नहीं पहोंचा सकती।

फिर अबान (इस हदीस के रावी) को फालीज की बिमारी लग गई तो कीसीने उनसे कहा:

वह दुआ कहां गई जो तुम बयान किया करते थे?

तो फरमाया:

खुदाए पाक की कसम न मेनें तुमको वह झुटी हदीस बयान की और न मुझे वह झुट बयान की गई, (हदीसें तो अपनी जगह बील्कुल सहीह है के उसके पढने से कोई चीज़ नुकसान नहीं पहोंचा सकती।) लेकीन जब अल्लाह तआलाने मेरे उपर अपनी तकदीर को नाफीज़ करना चाहा तो में वह दुआ पढना ही भुल गया।

(तिरमिज़ी : २/१७६, तबरानी : ह.नं. ३१७, २/९४०)

फज़ीलत: हदीस शरीफ में है के जो शख्स हर रोज़ सुब्ह–शाम यह कलिमात (यअनी उपरवाली दुआ) तीन मरतबह पढेगा उस को कोई चीज़ नुकसान नहीं पहोंचाती। (अत्तरगीब १/४१५) और एक रिवायत में है के उस पर कोई अचानक आफत नहीं आती।

(अबुदावुद १/६९४)

﴾१८﴿ जान–माल, घरबार की सलामती की दुआ

رَبِّـيَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ إِلٰـهَ إِلَّا هُوَ ، عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَ هُوَ

رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ، مَا شَاءَ اللّٰهُ كَانَ وَ مَا لَمْ يَشَأْ لَمْ يَكُنْ، وَ لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ، أَشْهَدُ أَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ وَّ أَنَّ اللّٰهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا، أَعُوذُ بِاللّٰهِ الَّذِي يُمْسِكُ السَّمَاءَ أَنْ تَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ إِلَّا بِإِذْنِهِ مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ رَبِّي آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا إِنَّ رَبِّي عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ.

हज़रत हसन रह. से रिवायत है के हम नबी ए करीम ﷺ के एक सहाबी के पास बेठे हुए थे तो कीसीने आ कर उनको कहा: के

तुम्हारे घर की खबर लीजीये, वह जल चूका है

तो आपने फरमाया: के

नहीं जला है,

वोह शख्स जा कर फिर आया। कहने लगा अपने घर की खबर लो, जल गया है।

उन्होंने जवाब दीया, नहीं! खुदाए पाक की कसम मेरा घर नहीं जला है।

तो उस पर खबर देने वाले ने कहा के, घर तो जल गया है और आप हें के कसम खा रहे हो के नहीं जला?

तो उन सहाबी रदि. ने अर्ज़ कीया:

के मैंने हुज़ूर अकदस ﷺ को इर्शाद फरमाते हुए सुना के,

जो शख्स सुब्ह में यह दुआ पढे तो उस शख्स को अपने जान–माल और घरबार के सीलसीले में कोई नागवार बात पेश नहीं आएगी। और आज में ने यही दुआ पढी है।

फिर उन सहाबी ने अर्ज़ कीया:

उठो (घर की हालत देखें) चुनान्चे आप के साथ सब खडे हुवे, (घर पहोंचे तो क्या देखते है के) आस–पास का सबकुछ जल गया है और उनके घर को कुछ भी नहीं हुवा। (इब्नुस्सुन्नी : पेज नं. २१ ह.नं. ५८)

दुश्मनों और बलाओं से हिफाज़त

﴾१९﴿ सुब्ह–शाम मांगने की दो मुबारक दुआएं

١۔ اَللّٰھُمَّ اِنِّی أَعُوْذُ بِکَ مِنْ جَھْدِ الْبَلَآءِ، وَ دَرْکِ الشَّقَاءِ، وَ سُوْءِ الْقَضَاءِ، وَ شَمَاتَةِ الْأَعْدَاءِ.

(मफहूम अज़ बुखारी शरीफ २/९७९)

۲۔ اَللّٰھُمَّ اِنِّی اَعُوْذُ بِکَ مِنْ شَرِّ مَا عَمِلْتُ، وَ مِنْ شَرِّ مَا لَمْ اَعْمَلْ.

(इब्ने माजा: २७२)

हर बुराइ हर तकलीफ से हिफाज़त

﴾२०﴿ हर तकलीफ से अमान पाने की दुआ

اَعُوْذُ بِکَلِمَاتِ اللّٰہِ التَّامَّـاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ.

कबीलए असलम के एक आदमीने हुज़ुर ﷺ से कहा के आजकी रात मुझे नींद नहीं आयी,

इर्शाद फरमाया :

कीस वजह से?

उन्होंने कहा: के

मुझे बिच्छुने डस लीया।

तो आप ﷺ ने फरमाया:

अगर शाम को तुमने यह दुआ पढली होती तो (इन्शा अल्लाहु अज्ज वजल्ल) कोई चीज़ तुम्हें तकलीफ न पहोंचाती।

(मुस्लीम : २/३४७, तबरानी : ह.नं. ३४६, २/९५५,)

नोट: तिरमिज़ी शरीफ की एक हदीस में आया है के

शाम के वक्त तीन मरतबह इस दुआ को पढने से उस रात में बुखार-ज़हर (वगैरह कोई चीज़) नुकसान नहीं देगी। (तिरमिज़ी: २/२००)

(२१) आयतुल कुर्सी और सुरए मुअमिन की चंद आयतोंकी फज़ीलत

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ۝ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

حٰمٓ ۝ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝ غَافِرِ الذَّنْبِ وَ قَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِى الطَّوْلِ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝

१. हज़.अबु हुरयरह रदि. से रिवायत है के रसुलुल्लाह ﷺ ने फरमाया के जो शख्स शुरू दिन में आयतुलकुर्सी और सूरए मुअमिन की पेहली तीन आयतें (उपरवाली) पढ ले वह उस दिन शाम तक (हर बुराइ और तकलीफ से) महफूज़ रहेगा। और जो शाम को पढ लेवे तो सुब्ह तक (हर बुराइ और तकलीफ से) महफूज़ रहेगा।

(तिरमीज़ी: २/११५)

फायदा: हदीस शरीफ में है के आप ﷺ कीसी जिहाद के मौके पर रात में हिफाज़त के लीये फरमा रहे थे के अगर रात में तुम पर अचानक हमला किया जावे तो तुम (حٰمٓ لَا يُنْصَرُوْنَ) पढ लेना, जिसका हासिल लफज़े

حٰمٓ के साथ यह दुआ करना है के हमारा दुश्मन कामियाब न हो और एक रिवायत में (حٰمٓ لَا يُنْصَرُوْا) बगैर नुन के आया है, जिसका हासिल यह है के जब तुम حٰمٓ कहोगे तो दुश्मन कामियाब न होगा। इससे मालुम हुवा के حٰمٓ दुश्मन से हिफाज़त का किला है। (इब्ने कसीर) मआरिफुल कुर्आन में इस जगह हज़रत साबीत बुनानी रह. का अजीब व गरीब वाकिअह लिखा हुवा है। मअ हवाला यहां दर्ज किया जाता है।

हज़रत साबित बुनानी रह. फरमाते है के में हज़रत मुस्अब बिन ज़ुबैर रदि. के साथ कुफा के इलाके में था। में एक बाग के अंदर चला गया के दो रकअत पढ लुं, मैंने नमाज़ से पहले حٰمٓ الْمُؤْمِن की आायतें إِلَيْهِ الْمَصِيْرُ तक पढी। अचानक देखा के एक शख्स मेरे पीछे एक सफेद खच्चर पर सवार खडा है, जिसके बदन पर यमनी कपडे है। उस शख्स ने मुझसे कहा के जब तुम غَافِرِ الذَّنْب कहो तो उसके साथ यह दुआ करो يَا غَافِرَ الذَّنْبِ إِغْفِرْلِى यअनी ए गुनाहों के मुआफ करनेवाले मुझे मुआफ करदे। और जब तुम पढो, يَا قَابِلَ التَّوْبِ إِقْبَلْ تَوْبَتِىْ तो यह दुआ करो قَابِلِ التَّوْب यअनी ए तौबा के कबूल करनेवाले मेरी तौबा कबूल फरमा फिर जब पढो شَدِيْدِ الْعِقَاب तो यह दुआ करो يَا شَدِيْدَ الْعِقَابِ لَا تُعَاقِبْنِى ए सख्त इकाबवाले मुझे अज़ाब

न दीजीये। और जब ذِىْ الطَّوْل पढो तो यह दुआ करा يَا ذَا الطَّوْلِ طُلْ عَلَىَّ بِخَيْرٍ यअनी ए इन्आमो एहसान करनेवाले मुझ पर इन्आम फरमा।

साबित बुनानी रह. केहते है यह नसीहत उससे सुनने के बाद जो उधर देखा तो वहां कोई न था। में उसकी तलाश में बाग के दरवाज़े पर आया, लोगों से पुछा के एक ऐसा शख्स यमनी लिबास में यहां से गुज़रा है? सबने कहा के हमने कोई ऐसा शख्स नहीं देखा। साबित बुनानी रह. की एक रिवायत में यह भी है के लोगों का ख्याल है के यह हज़रत इल्यास अल. थे। दूसरी रिवायत में उसका ज़िक्र नहीं।

(मआरिफुल कुर्आन ७/५८१,५८२)

(२२) हिफाज़त के लीये हज़. अनस रदि. की खास दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰى نَفْسِيْ وَ دِيْنِيْ، بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰى أَهْلِيْ وَ مَالِيْ وَوَلَدِيْ، بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰى مَا أَعْطَانِيَ اللّٰهُ، اَللّٰهُ رَبِّيْ لَا أُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا، اَللّٰهُ أَكْبَرُ، اَللّٰهُ أَكْبَرُ، اَللّٰهُ أَكْبَرُ. وَأَعَزُّ وَ أَجَلُّ وَ أَعْظَمُ مِمَّا أَخَافُ وَ أَحْذَرُ، عَزَّ جَارُكَ وَ جَلَّ ثَنَائُكَ وَلَآ إِلٰهَ غَيْرُكَ ،

اَللّٰھُمَّ اِنِّی اَعُوْذُ بِکَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ وَ مِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْطَانٍ مَّرِيْدٍ وَّ مِنْ شَرِّ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ، فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ، عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ، اِنَّ وَلِيِّيَ اللّٰهُ الَّذِيْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ، وَ هُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ۔

ये हज़रत अनस बिन मालिक रदि. की दुआ है, जो आँ हज़रत ﷺ के खादिमे खास थे। दस साल आँ हज़रत ﷺ की खिदमत में रहे और आँ हज़रत ﷺ ने उनकी वालिदह की दरख्वास्त पर उनको दुन्या व आखिरत की भलाइ की दुआ से मुशर्रफ व मख्सूस फरमाया था। और हक सुब्हानहु व तआला ने आँ हज़रत ﷺ की दुआ की बरकत से उनकी उम्र और माल और अवलाद में अज़ीम बरकत अता फरमाई, चुनान्चे उनकी उम्र सौ साल से ज्यादा हुई। और उनकी सुल्बी अवलाद की तअदाद सौ को पहोंची है। जिनमें ७३ मर्द थे, और बाकी औरतें। और उनका बाग साल में दो बार फल लाता। यह दुन्या की बरकात थीं। (जो बतुफैले दुआए आँ हज़रत ﷺ उनको हासिल हुई) बाकी आखिरत की बरकात का अंदाज़ा कोन कर सकता है?

शैख जलालुद्दीन सुयूती रह. जलीलुल कद्र हाफिज़े हदीस है उन्होंने ''जमउल् जवामेअ'' में नकल किया है के अबुश्शैख ने किताबुस्सवाब में यह वाकिअह रिवायत किया है के एक दिन हज़रत अनस रदि.हज्जाज बिन युसुफ सकफी के पास बेठे थे। हज्जाज ने हुकम दिया के उनको मुख्तलिफ किस्म के चारसो घोडों का मुआयनह कराया जाए। हुकम की तअमील की गई। हज्जाजने हज़रत अनस रदि. से कहा: फरमाइए अपने आका यअनी आँ हज़रत ﷺ के पास भी इस किस्म के घोडे और नाज़ो नेअमत का सामान कभी आपने देखा? (तब हज़. अनस रदि. ने) फरमाया: बखुदा यकीनन् मैंने आँ हज़रत ﷺ के पास इस से बदर्जहा बेहतर चीज़ें देखीं और मैंने आँ हज़रत ﷺ से सुना के आप ﷺ फरमाते थे जिन घोडों की लोग परवरिश करते है, उनकी तीन किस्में है एक शख्स घोडा इस निय्यत से पालता है के हक तआला के रास्ते में जिहाद करेगा। और दादे शुजाअत देगा। उस घोडे का पेशाब, लीद, गोश्त, पोश्त और खून कयामत के दिन तमाम उसके तराज़ुए अमल में होगा। और दूसरा शख्स घोडा इस निय्यत से पालता है के ज़रूरत के

वक्त सवारी किया करे और पैदल चलने की ज़हमत से बचे। (ये न सवाब का मुस्तिहक है और न अज़ाब का) और तीसरा वह शख्स है जो घोडे की परवरिश नाम और शोहरत के लिये करता है ताके लोग देखा करे के फुलां शख्स के पास इतने और ऐसे ऐसे उम्दह घोडे है। उसका ठिकाना दोज़ख है। और हज्जाज! तेरे घोडे इसी किस्म में दाखिल है। हज्जाज यह बात सुन कर भडक उठा और उसके गुस्से की भटटी तेज़ हो गई और केहने लगा ए अनस! जो खिदमत तुमने आँ हज़रत ﷺ की की है अगर उसका लिहाज़ न होता, नीज़ अमीरूल मुअमिनीन अब्दुल मलिक बिन मरवान ने जो खत मुझे तुम्हारी सिफारिश और रिआयत के बाब में लिखा है, उसकी पासदारी न होती तो नहीं मअलूम के आज में तुम्हारे साथ क्या कर गुज़रता। हज़रत अनस रदि. ने फरमाया: खुदा की कसम तु मेरा कुछ नहीं बिगाड सकता। और न तुज़में इतनी हिम्मत है के तु मुझे नज़रेबद से देख सके। मैंने आँ हज़रत ﷺ से चंद कलिमात सुन रखे है में हंमेशा इन्ही कलिमात की पनाह में रहता हुं और इन कलिमात की बरकत से मुझे न किसी सुल्तान के रोब से खोफ है न किसी शैतान के

शर से अंदेशा है। हज्जाज इस कलाम की हयबत से बेखुद और हैरान हो गया। थोडी देर बाद सर उठाया और (निहायत लजाजत से) कहा ए अबु हम्ज़ह (हज़. अनस रदि. की कुन्नियत) वह कलिमात मुझे भी सीखा दीजीये। फरमाया तुज़े हरगिज़ न सिखाउंगा। बखुदा तु उसका अहल नहीं।

फिर जब हज़रत अनस रदि. के विसाल का वक्त आया। अबान जो आपके खादिम थे, हाज़िर हुए। और आवाज़ दी। हज़रत ने फरमाया क्या चाहते हो? अर्ज़ किया वही कलिमात सीखना चाहता हुं जो हज्जाज ने आपसे चाहे थे मगर आपने उसको सिखाए नहीं। फरमायाः हां तुज़े सिखाता हुं, तु उनका अहल है। मैंने आँ हज़रत ﷺ की दस बरस खिदमत की। और आप ﷺ का इन्तेकाल इस हालत में हुवा के आप ﷺ मुझसे राज़ी थे। इसी तरह तुने भी मेरी खिदमत दस साल तक की और में दुनिया से इस हालत में रूख्सत होता हुं के में तुज़से राज़ी हुं। सुब्ह शाम यह कलिमात पढा करो। हक सुब्हानहु व तआला तमाम आफात से महफूज़ रखेंगे। वह दुआ उपरवाली है।

(मअखूज़ अज़ आपके मसाइल ओर उनका हल ८/२३३ से २४६)

नोटः इस दुआ को सुब्ह शाम पढने का मामुल बनाना चाहीए।

हर किस्म के गम और दुशमन से हिफाज़त

(२३) गम और कर्ज़ से छुटकारा पानेका मुजर्रब वज़ीफा

اَللّٰھُمَّ إِنِّیْ أَعُوْذُ بِکَ مِنَ الْھَمِّ وَ الْحُزْنِ، وَ أَعُوْذُ بِکَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْکَسَلِ وَأَعُوْذُ بِکَ مِنَ الْجُبْنِ وَ الْبُخْلِ، وَ أَعُوْذُ بِکَ مِنْ غَلَبَۃِ الدَّیْنِ وَ قَھْرِ الرِّجَالِ.

फज़ीलत: हज़रत अबु सइद खुदरी रदि. फरमाते है के एक मरतबह हुज़ुर अकदस ﷺ मस्जिदमें दाखील हुए तो वहां एक अन्सारी सहाबी को देखा, जिनको अबु उमामह केहते है, रसुलुल्लाह ﷺ ने पुछा:

अबु उमामह क्या हुवा? के आप नमाज़ के वक्त के अलावा मस्जिद में बेठे है?

उन्होंने जवाब दीया:

या रसुलल्लाह मुझ पर फिकरों ओर कर्ज़ों का हुजुम हो गया है,

हुज़ुर ﷺ ने फरमाया:

कया में तुमको वह कलिमात न सीखाउं जब तुम उन्हें पढो तो अल्लाह तआला तुम्हारे गम को दुर कर

दे। और कर्ज़ा अदा कर दे,

उन्होंने कहाः ज़रूर या रसुलल्लाह!

रसुलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः के

सुब्ह शाम यह (उपरवाले) कलिमात पढा करो।

वोह सहाबी फरमाते है के में ने ऐसा ही किया तो अल्लाहतआला ने मेरी परेशानी को दूर कर दीया और मेरे कर्ज़ों को मुझसे अदा करवा दीया।

(अबुदावुदः १/२१७)

नोटः "सुरए इख्लास" यअनी कुल हुवल्लाह, "सूरए फलक" यअनी कुल अउज़ू बिरब्बिल फलक और "सूरए नास" यअनी कुल अउज़ु बिरब्बीन्नास इससे भी दुश्मन से हिफाज़त होती है। लिहाज़ा इन तीनों सूरतों को सुब्ह–शाम तीन–तीन मरतबह पढ लेना चाहिये। और रात सोते वक्त भी हदीस में आये हुवे तरीके के मुताबिक तीनों सुरतों को पढ कर पूरे बदन पर दम कर लेना चाहिये। दम की इब्तिदा चेहरे और सामने की तरफ से करे। और सुब्ह उठते वक्त और हर फर्ज़ नमाज़ के बाद भी कुल अउज़ु बिरब्बिल फलक और कुल अउज़ु बिरब्बिन्नास को पढ लेवे।

इसी तरह हर फर्ज़ नमाज़ के बाद और रात को सोते वक्त आयतुल कुर्सी भी पढ लेनी चाहिये।

अल्लाह तआला गम को खुशी से बदल दे

(२४) अल्लाहतआला गम को खुशीयों से बदल देवे

اَللّٰهُمَّ إِنِّی عَبْدُکَ ابْنُ عَبْدِکَ ابْنُ أَمَتِکَ، نَاصِيَتِي بِيَدِکَ، مَاضٍ فِيَّ حُکْمُکَ عَدْلٌ فِيَّ قَضَائُکَ، أَسْئَلُکَ بِکُلِّ اسْمٍ هُوَ لَکَ سَمَّيْتَ بِهِ نَفْسَکَ أَوْ عَلَّمْتَهُ أَحَدًا مِّنْ خَلْقِکَ أَوْ اَنْزَلْتَهُ فِيْ کِتَابِکَ اَوِ اسْتَأْثَرْتَ بِهٖ فِيْ عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَکَ أَنْ تَجْعَلَ الْقُرْآنَ رَبِيْعَ قَلْبِيْ وَ نُوْرَ صَدْرِيْ، وَ جَلَاءَ حُزْنِيْ، وَ ذَهَابَ هَمِّيْ.

फज़ीलत: हदीस शरीफ में है के जिस शख्स को कोई गम या फिक्र लग गई हो तो वह इन कलिमात के ज़रीये दुआ करे। इर्शाद फरमाया:

जो बंदाभी इन कलिमात को पढेगा अल्लाह तआला उस के गम को यकीनन् कुशादगी से बदल देंगे। सहाबा ने फरमाया:

क्या हम दुसरों को भी न सीखावें?

आप ﷺ ने इर्शाद फरमाया:

क्यों नहीं, बल्के मुनासिब है की हर सुननेवाला यह कलिमात सीख लेवे।

(मु. अहमद ह.नं. ३७०४, १/६४६)

﴾२५﴿ बुरा बुढापा, बखीली, बुज़दिली, दुनिया के फित्ने और अज़ाबे कब्र से हिफाज़त की एक जामेअ दुआ

اَللّٰھُمَّ إِنِّیْ أَعُوْذُ بِکَ مِنَ الْبُخْلِ وَأَعُوْذُ بِکَ مِنَ الْجُبْنِ وَ أَعُوْذُ بِکَ أَنْ أُرَدَّ إِلٰی أَرْذَلِ الْعُمُرِ وَأَعُوْذُ بِکَ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْیَا وَعَذَابِ الْقَبْرِ.

नसइ में बरिवायते हज़रत सअद रदि. मनकूल है के रसूलुल्लाह ﷺ यह दुआ बकसरत मांगा करते थे।

और इस हदीस के रावी हज़रत सअद रदि. बडे एहतेमाम से यह दुआ अपनी सब अवलाद को याद कराया करते थे।

(मआरिफुल कुर्आन: ६/२४१, कन्ज़ुल उम्माल: ह.नं.५०९५; २/६९०)

औरतों और बच्चों के लिये खुसुसी हिफाज़त की दुआएं

﴾२६﴿ औरतों और बच्चों के लीये हिफाज़त की दुआ

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ بِحَمْدِهٖ لَاقُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ، مَا شَاءَ اللّٰهُ كَانَ وَ مَا لَمْ يَشَأْ لَمْ يَكُنْ، أَعْلَمُ أَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ وَّ أَنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا.

फज़ीलत: अबुदावुद शरीफ में है के

एक सहाबीय्यह जो हुज़ुर ﷺ के किसी बच्चीकी खिदमत किया करती थी,

उनसे रिवायत है के हुज़ुर ﷺ की साहबज़ादीने यह रिवायत बयान की है, के

हुज़ुर ﷺ हमें सीखाते थे के

सुब्ह इन (उपरवाले) अल्फाज़ के साथ दुआ मांगा करो। बेशक जो इस तरह दुआ मांगे शाम तक उसकी हिफाज़त होगी और जो शाम को इन अल्फाज़ के साथ दुआ मांगे उसकी सुब्ह तक हिफाज़त की जाएगी। (अबुदावुद २/६९२)

लिहाज़ा ओरतों ओर बच्चों को तो यह उपरवाली दुआ सुब्ह शाम मांगनी चाहीए।

﴿२७﴾ बच्चों को पनाह में देने के लीये पढे जानेवाले कलिमात

أُعِيذُكُمَا بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّةِ مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَّ هَامَّةٍ وَّ مِنْ كُلِّ عَيْنٍ لَّامَّةٍ .

(हिस्नुल मुस्लीम ह.नं. १४६ पेज नं : ९३)

इब्ने अब्बास रदि. फरमाते है के नबीए करीम ﷺ हज़रत हसन ओर हुसैन रदि. को इन कलिमात के ज़रीये पनाह में देते थे।

गुस्से से हिफाज़त

﴿२८﴾ जब गुस्सा आवे तो यह दुआ पढे

أَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ.

(हिस्नुल मुसलिम: १०५, इब्नुस्सुन्नी: १४२, तिरमिज़ी: २/१८३)

﴿२९﴾ जब किसीको मुसीबत में देखे तो अपनी हिफाज़त के लिये यह दुआ पढे

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ عَافَانِيْ مِمَّا ابْتَلاكَ بِهٖ وَفَضَّلَنِيْ

عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِيْلاً.

फज़ीलत: मुसीबत में फंसे हुवे आदमी को देख कर जो आदमी यह दुआ पढे वह जब तक दुनिया में मौजूद है मुसीबत से महफूज़ रहेगा। (तिरमिज़ी: २/१८१)

नोट: किसीभी इन्सान को किसी भी तकलीफ में परेशान देखे तो उसकी उस तकलीफ पर हमारे दिल में खुशी का ख्याल तक न आए। बल्के फोरन यह दुआ पढ लेवे।

शिर्क और दिखलावे से हिफाज़त

﴾३०﴿ शिर्के अकबर (यअनी अल्लाह तआला के साथ किसीको शरीक करना) शिर्के असगर (यअनी रियाकारी, किसीको दिखाने के लिये अमल करना) दोनों से हिफाज़त की एक जामेअ दुआ

اَللّٰهُمَّ إِنِّیْ أَعُوْذُ بِکَ أَنْ أُشْرِکَ بِکَ وَ أَنَا أَعْلَمُ وَ أَسْتَغْفِرُکَ لِمَا لَا أَعْلَمُ.

हज़. अबुबक्र रदि. से रिवायत है के, रसुलुल्लाह ﷺ ने एक मरतबह शिर्क का ज़ीक्र फरमाया के शिर्क तुम्हारे अंदर ऐसे छुपे अंदाज़ से आ जाता है जैसे च्यूंटी

(कीडी) की रफतारे बे आवाज़। और फरमाया के में तुम्हें एक ऐसा काम बतलाता हुं के जब तुम वह काम कर लो तो शिर्के अकबर (बळा शिर्क) और शिर्के असगार (छोटा शिर्क यअनी रीया-दिखलावे के लीये कोई काम करना) सब से महफुज़ हो जाओ। तुम तीन मरतबह रोज़ाना यह दुआ किया करो, फिर उपरवाली दुआ बतलाइ। (मआरिफुल कुर्आन : ५/६६३)

बिमारी या बदन में दर्द या गभराहट दुर करने के लीये खास खास दुआएं

﴾३१﴿ गभराहट के वक्त पढने की दुआ

हज़रत बराअ रदि. से मरवी है के एक शख्स ने नबीए करीम ﷺ के पास आ कर वहशत (गभराहट) की शिकायत की तो आपने इर्शाद फरमाया के यह दुआ पढा करो।

سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ رَبِّ الْمَلٰئِكَةِ وَ الرُّوْحِ، جَلَّتِ السَّمٰوَاتُ وَ الْأَرْضُ بِالْعِزَّةِ وَ الْجَبَرُوْتِ.

उस शख्स ने यह दुआ पढी तो उससे गभराहट दूर हो गई। (मजमउज़्ज़वाइद १०/१२८ इब्नुस्सुन्नी ह.नं. ६३९ पेज:१६३)

﴾३२﴿ आंख की बिमारी की दुआ

اَللّٰهُمَّ مَتِّعْنِي بِسَمْعِيْ وَ بَصَرِيْ، وَاجْعَلْهُ الْوَارِثَ مِنِّى، وَ أَرِنِي فِي الْعَدُوِّ ثَأْرِي، وَ انْصُرْنِي عَلٰى مَنْ ظَلَمَنِي.

हज़. अनस बिन मालिक रदि. से मरवी है के नबीए करीम ﷺ के कीसी भी सहाबी को आंख में बिमारी होती तो यह दुआ पढते।

(इब्नुस्सुन्नी ह.नं. ५६५ पे.११४)

﴾३३﴿ सख्त बिमारी के मोके पर पढने की आयत

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ۝ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَّأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ. فَتَعَالَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ج لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ. وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ إِلٰهًا آخَرَ لا لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ لا فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ ط إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ۝ وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ۝

सुरए मुअमिनुन की यह आखरी आयतें खास फज़ीलत रखती है। बगवी और सअलबी ने हज़रत

अब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद रदि. से रिवायत किया है के उनका गुज़र एक ऐसे बिमार पर हुवा जो सख्त बिमारीयों में मुब्तला था। हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद रदि. ने उसके कान में यह आयतें أَفَحَسِبْتُمْ से अखीर तक पढ दी। वह उसी वक्त अच्छा हो गया, रसूलुल्लाह ﷺ ने उनसे दरयाफत किया के आपने उसके कान में क्या पढा? हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद रदि. ने अर्ज़ किया के यह आयतें पढी है। रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया कसम है उस ज़ात की, जिसके कब्ज़े में मेरी जान है अगर कोई आदमी जो यकीन रखनेवाला हो यह आयतें पहाड के सामने पढ दे तो पहाड अपनी जगह से हट सकता है।

(कुर्तुबी: १२/१५७)

﴾३४﴿ हर किस्म के दर्द ओर बुखार की दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ الْكَبِيْرِ، أَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ، مِنْ شَرِّ كُلِّ عِرْقٍ نَّعَّارٍ وَّ مِنْ شَرِّ حَرِّ النَّارِ.

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रदि. से मरवी है के नबीए करीम ﷺ सहाबा रदि. को हर किस्म के दर्द और बुखार के लीये यह दुआ सिखलाते थे।

(तिरमीज़ी पेज नं. २/२७ ह.नं.२०८०किताबुत्तीब्ब)

﴾३५﴿ बिमारी दूर करने के लिये

تَوَكَّلْتُ عَلَى الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَداً وَّ لَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَ لَمْ يَكُنْ لَّهُ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيراً.

हज़रत अबु हुरयरह रदि. फरमाते है के एक रोज़ में रसूलुल्लाह ﷺ के साथ बाहर निकला इस तरह के मेरा हाथ आपके हाथ में था आपका गुज़र ऐसे शख्स पर हुवा जो बहोत शिकस्ता हाल और परेशान था आपने पुछा के तुम्हारा यह हाल कैसे हो गया? उस शख्स ने अर्ज़ किया के बिमारी और तंगदस्ती ने यह हाल कर दिया, आप ﷺ ने फरमाया: के में तुम्हें चंद कलिमात बतलाता हुं वह पढोगे तो तुम्हारी बिमारी और तंगदस्ती जाती रहेगी वह कलिमात उपरवाले थे।

उसके कुछ अरसे के बाद फिर आप उस तरफ तशरीफ ले गए तो उसको अच्छे हाल में पाया आपने खुशी का इज़्हार फरमाया उसने अर्ज़ किया जबसे आपने मुझे यह कलिमात बतलाए थे में पाबंदी से उनको पढता हुं। (मआरिफुल कुर्आन: ५/५४३)

तंदुरस्ती और दीन दुनिया की आफियत और सलामती की दुआएं

﴾३६﴿ तंदुरस्ती और आफीयत के लीये

١۔ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِکَ أَسْتَغِيْثُ، أَصْلِحْ لِيْ شَأْنِيْ كُلَّهٗ، وَ لَا تَكِلْنِيْ إِلٰى نَفْسِيْ طَرَفَةَ عَيْنٍ.

(अत्तरगीब वत्तरहीब: २/४२१)

٢۔ اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ بَدَنِيْ، اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ سَمْعِيْ، اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ بَصَرِيْ، لَآ إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ.

(अबु दावुद २/६९४)

उपरवाले दोनों कलिमात सुब्ह शाम तीन तीन बार पढ लेना चाहिये।

﴾३७﴿ हिफाज़त और आफीयत की खास दुआ

اَللّٰهُمَّ إِنِّى أَسْئَلُکَ الْعَافِيَةَ فِيْ الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ، اَللّٰهُمَّ إِنِّىْ أَسْئَلُکَ الْعَفْوَ وَ الْعَافِيَةَ فِيْ دِيْنِيْ وَ فِيْ دُنْيَايَ وَ اَهْلِيْ وَ مَالِيْ، اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِيْ وَ اٰمِنْ رَوْعَاتِيْ، اَللّٰهُمَّ احْفَظْنِيْ مِنْ بَيْنِ يَدَيَّ وَ مِنْ خَلْفِيْ

وَ عَنْ يَمِيْنِي وَ عَنْ شِمَالِي وَمِنْ فَوْقِي، وَ أَعُوْذُ بِعَظْمَتِکَ أَنْ أُغْتَالَ مِنْ تَحْتِي.

फज़ीलत: हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रदि. फरमाते हैं के आँ हज़रत ﷺ। सुब्ह शाम इन अल्फाज़ से दुआ मांगा करते थे ओर इस मुबारक दुआ का अमल हमेशा रहा। (मिश्कात: १/२१० अबुदावुद: २/६९२)

(३८) सूरए मुअमिनुन की आखरी आयत का अजीब फायदा

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ۝ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَّأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ. فَتَعَالَى اللّٰهُ الْمَلِکُ الْحَقُّ ۚ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ. وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ إِلٰهاً آخَرَ ۙ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهٖ لا فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ. وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ.

नोट: इन आयात को सुब्ह-शाम पढते रेहना चाहिये। तंदुरस्ती और सलामती हासिल होगी। और गनीमत का माल हासिल होगा। (इब्नुस्सुन्नी: ह.नं.७७ पेज: ३३)

हर किस्म की मुश्किलात में आसानी और बेचैनी दूर करने की दुआएं

﴾३९﴿ भारी से भारी काम में आसानी के लीये

हदीसे पाक में यह दुआ मुसलमानों को तलकीन की गई है।

اَللّٰهُمَّ الْطُفْ لِي فِيْ تَيْسِيْرِ كُلِّ عَسِيْرٍ، فَإِنَّ تَيْسِيْرَ كُلِّ عَسِيْرٍ عَلَيْكَ يَسِيْرٌ. وَ اَسْئَلُكَ الْيُسْرَ وَ الْمُعَافَاةَ فِي الدُّنْيَا وَ الْآخِرَةِ.

(अलमुअजमुल अवसत तबरानी ह.नं. १२७२, २/१४६)

﴾४०﴿ मुश्किलात पर उबूर (काबु) हासिल करने का नुस्खा

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ۝ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّ عَدْلًا لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ، وَ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ.

गज़वए अहज़ाब में खन्दक खोदते वक्त जब भारी चटान निकल आइ तो यह आयत पढ कर आप ﷺ ने कुदाल मारी, जिससे वह चटान टुकडे टुकडे हो गई। (कुरतुबी: १४/१३० कमी-बेशी के साथ)

कीसी मुश्किल को दूर करने के लीये इस आयत की तिलावत एक मुजर्रब (आज़माया) हुवा नुस्खा है।

(मआरिफुल कुर्आन ७/१०६)

(४१) इजतिमाइ–इन्फिरादी मुसीबतों के वक्त

अबुदावुद में हज़रत सअद इब्ने अबी वक्कास रदि. से रिवायत है के आँ हज़रत ﷺ ने फरमाया, हज़रत युनुस अ.स. ने जो दुआ मछली के पेट में की थी यअनी

لَآ إِلٰـهَ إِلَّآ أَنۡتَ سُبۡحٰنَکَ إِنِّیۡ کُنۡتُ مِنَ الظّٰلِمِیۡنَ.

उसे जो मुसलमान भी कीसी मकसद के लीये पढेगा उसकी दुआ कबुल होगी।

(मआरिफुल कुर्आन ७/४७९, कुरतुबीः ११/३३४)

हज़रत युनुस अ.स. जब मछली के पेट में थे तो यह कलिमह खास तोर से पढते थे। अल्लाहतआलाने इसकी बरकत से उन्हें इस आज़माइश से नजात अता फरमाई। और मछली के पेट से सहीह सालीम निकल आये। इस लीये बुज़ुर्गों से यह मन्कुल चला आ रहा है के वह इन्फिरादी या इजतिमाइ मुसीबत के वक्त यह कलिमह सव्वा लाख मरतबह पढते थे और इस की बरकत से अल्लाहतआला मुसीबत को दूर फरमा देता।

(मआरिफुल कुर्आन ७/४७९)

﴾४२﴿ तकलीफ और बेचेनी के वक्त पढने की दुआ

सहीह बुखारी और मुस्लीम में है के रसुले करीम ﷺ को जब कोई तकलीफ और बेचेनी पेश आती तो यह दुआ पढते।

لَآ إِلٰـهَ إِلَّا اللّٰهُ الْعَظِيْمُ الْحَلِيْمُ، لَآ إِلٰـهَ إِلَّا اللّٰهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمُ، لَآ إِلٰـهَ إِلَّا اللّٰهُ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَ رَبُّ الْأَرْضِ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمُ.

इमाम तबरी रह. ने फरमाया सलफे सालिहीन (अगले बुज़ुर्गाने किराम) इसको दुआए कर्ब कहा करते थे और मुसीबत और परेशानी के वक्त यह कलिमात पढ कर दुआ करते थे। (मुस्लीमः २/३५१ ह.नं. २७३०)

﴾४३﴿ जो आदमी दुनिया के सब सहारों से मायुस हो गया हो उसके लिये एक जामेअ दुआ

اَللّٰهُمَّ رَحْمَتَكَ أَرْجُوْا فَلَا تَكِلْنِي إِلَىٰ طَرْفَةَ عَيْنٍ وَّأَصْلِحْ لِي شَأْنِي كُلَّهٗ لَآ إِلٰـهَ إِلَّا أَنْتَ.

(कुरतुबीः १३/२२३)

﴾४४﴿ हर काम आसान हो जावे

حَسْبِىَ اللّٰهُ لَآ إِلٰـهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَ هُوَ رَبُّ

الْعَرْشِ الْعَظِيمِ. (सात मरतबह)

फज़ीलत: एक हदीस में है के जो शख्स सुब्ह–शाम यह कलिमात सात मरतबह पढे तो अल्लाह तआला उसके हर कामको आसान फरमा देते है, यअनी दुनिया व आखिरत के हर अहम कामों की किफायत फरमाएंगे...

(तरगीब १/२५५, मकतबह अब्बास अहमद अलबाज़, मक्कतुल मुकर्रमह, अत्तबअतुल उला १४१७ हि. अबुदावुद)

नमाज़ से मुतअल्लिक पढने की खास खास दुआएं

﴾४६﴿ नमाज़ के बाद पढने की खास दुआ

اَللّٰهُمَّ أَعِنِّي عَلٰى ذِكْرِكَ وَ شُكْرِكَ وَ حُسْنِ عِبَادَتِكَ. (अबुदावुद : १/२१३)

हज़. मुआज़ बीन जबल रदी. से रिवायत है के नबीए करीम ﷺ ने मेरा हाथ पकड कर इर्शाद फरमाया, के मुआज़! मुझे तुमसे मुहब्बत है, फिर फरमाया के अय मुआज़! में तुमको ताकीद करता हुं के तुम किसीभी नमाज़ के बाद यह दुआ मत छोडना। (ज़रूर पढना) (अबु दावुद : ह.नं. १५२२, १/२१३)

﴾४६﴿ फर्ज़ नमाज़ों के बाद की एक और दुआ

لَآ إِلٰـهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْکَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ. اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْکَ الْجَدُّ.

(बुखारी : २/९३७)

﴾४७﴿ नमाज़ के बाद की खास दुआ

अल्लामह कुर्तुबी रह. ने अपनी सनद से हज़रत अबू सइद खुदरी रदि. का यह कोल नकल किया है के में ने आँ हज़रत ﷺ से कइ बार सुना के आप नमाज़ खत्म होने के बाद यह आयात तिलावत फरमाया करते थे।

سُبْحٰنَ رَبِّکَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ، وَ سَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ۔ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔

(सुरए साफफात १८०,१८१,१८२, तफसीर इब्ने कसीर, मआरीफुल कुर्आन ७/४८९ इब्नुस्सुन्नी: पेज नं.४५,४६; हदीस नं. ११९)

﴾४८﴿ नमाज़ के बाद पढने का एक अमल

हज़रत अबु हुरैरह रदि. हुज़ुर ﷺ से रिवायत करते है के रसुलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: जिसने

३३ मरतबह سُبْحَانَ اللّٰه

और ३३ मरतबह اَلْحَمْدُ لِلّٰہ

और ३३ मरतबह اَللّٰہُ اَکْبَرُ

पढा बस यह कुल ९९ मरतबह हुवा और सोंवी (१००वीं) मरतबह में

لَآ اِلٰــہَ اِلَّا اللّٰــہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَيْءٍ قَدِیْرٌ.

पढे तो उसके गुनाह मुआफ हो जाते है चाहे समन्दर की झाग के बराबर हों। (मुस्लिम शरीफः १/२१९)

नोटः ''आयतुल कुर्सी'' और ''सूरए फलक'' यअनी कुल अउज़ू बिरब्बिल फलक और ''सूरए नास'' यअनी कुल अउज़ु बिरब्बीन्नास भी हर फर्ज़ नमाज़ के बाद पढ लेना चाहिये

(४९) नमाज़ के बाद की अजीब फज़ीलत की दुआ

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔

(١) شَهِدَ اللّٰــهُ أَنَّهٗ لَآ اِلٰـهَ إِلَّا هُوَ وَ الْمَلٰئِكَةُ وَ أُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًا بِالْقِسْطِ، لَآ اِلٰـهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۔

(٢) قُلِ اللّٰـهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَ تَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ، وَ تُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ

وَ تُـذِلُّ مَـنْ تَشَآءُ، بِيَدِکَ الْخَيْرُ، إِنَّکَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ تُـوْلِـجُ الـلَّيْلَ فِيْ النَّهَارِ وَ تُوْلِجَ النَّهَارَ فِـيْ الـلَّيْـلِ، وَ تُـخْـرِجُ الْـحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَ تُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ، وَ تَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ۝

रसुले करीम ﷺ ने फरमाया के हकतआला का फरमान है जो शख्स हर नमाज़ के बाद सुरए फातिहा ओर आयतुल कुर्सी और सुरए आले इमरान की (उपरवाली) आयतें पढे तो मे उसका ठीकाना जन्नत में बना दुंगा। और उसको अपने हज़ीरतुल कुद्स में जगह दुंगा। और हररोज सत्तर मरतबह नज़रे रहमत करूंगा। और उसकी सत्तर हाजतें पुरी करूंगा। जिसमें से कम अज़ कम हाजत मगफिरत है और हर दुश्मनसे पनाह दूंगा। और उन पर उसको गालिब रखुंगा। (मआरिफुल कुर्आन २/४७, कन्जुल उम्माल: खुलासा ह.नं.५०५६; २/६७९)

(تكلم فيه ابن المتقى و اورد اقوال عديدة. فغاية تحقيقه ان الحديث غير موضوع)

﴿٥٠﴾ नमाज़ के बाद की दुआ

اَلـلّٰـهُـمَّ اغْـفِـرْ لِـيْ ذُنُـوْبِـيْ وَ خَطَايَايَ كُلَّهَا، اَللّٰهُمَّ أَنْـعِشْـنِـيْ وَ اجْـبُـرْنِـيْ وَ اهْدِنِيْ لِصَالِحِ الْأَعْمَالِ وَ

الْأَخْلَاقِ، إِنَّــهُ لَا يَهْدِىْ لِصَــالِحِهَا وَ لَا يَصْرِفُ سَيِّئَهَا إِلَّا أَنْتَ.

हज़रत अबू उमामह रदि. से रिवायत है के में जौनसी भी फर्ज़ और नफल में हुज़ुर ﷺ से करीब हुवा मैंने ज़रूर नबीए करीम ﷺ को यह दुआ पढते सुना। (इब्नुस्सुन्नी ह.नं. ११६)

﴾५१﴿ दो सजदों के दरमियान की दुआ

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ، وَ ارْحَمْنِيْ، وَاهْدِنِيْ، وَ عَافِنِيْ، وَ ارْزُقْنِيْ.

तर्जुमह: ए अल्लाह मेरी मगफिरत फरमा ओर मुझ पर रहम फरमा ओर मुझे हिदायत ओर आफियत और रिज्क अता फरमा। (मिश्कात १/८४)

﴾५२﴿ वित्र की नमाज़ के बाद पढने की दुआ

वित्र की नमाज़ का सलाम फेर कर तीन मरतबह यह दुआ पढे।

سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ.

तीसरी मरतबह पढते वक्त बुलंद आवाज़ से पढे ओर कुद्दूस की दाल और सीन को खींच कर पढे।

(अस्सुननुल कुबरा ४/१४१,ह.नं. ४९६६, अबुदावुद १/२०२)

﴾५३﴿ तहज्जुद की नमाज़ को उठे तो यह दुआ पढे।

हज़रत आयशा रदि. ने फरमाया के आप ﷺ जब तहज्जुद की नमाज़ को उठते थे तो यह दुआ पढते थे, (यअनी तहजजुद की नमाज़ को इस दुआ से शुरू करते थे)

اَللّٰهُمَّ رَبَّ جِبْرِيْلَ وَ مِيْكَائِيْلَ وَإِسْرَافِيْلَ، فَاطِرَ السَّمٰوَاتِ وَالْأَرْضِ، عَالِمَ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ، أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْمَا كَانُوا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ. اِهْدِنِيْ لِمَا اخْتُلِفَ فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِإِذْنِكَ، إِنَّكَ تَهْدِىْ مَنْ تَشَآءُ إِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ.

(मुस्लिम: १/२६३)

अगर तुम चाहो के तुम्हारी दुआ कबूल हो जावे

﴿٥٧﴾

اَللّٰهُمَّ أَنْتَ خَلَقْتَنِيْ وَ أَنْتَ تَهْدِيْنِيْ وَ أَنْتَ تُطْعِمُنِيْ وَ أَنْتَ تَسْقِيْنِيْ وَ أَنْتَ تُمِيْتُنِيْ وَ أَنْتَ تُحْيِيْنِيْ.

फज़ीलत: हज़रत हसन रदि. फरमाते है के हज़रत

समुरह इब्ने जुन्दुब रदि. फरमाते है के में तुमसे एक हदीस न बयान करूं जिसे मैंने नबीए पाक ﷺ से बार बार सुनी है,

इसी तरह हज़रत अबुबक्र रदि. से बार बार सुनी,

इसी तरह हज़रत उमर रदि. से बार बार सुनी

मेने कहाः हां,

उन्होंने कहा,

सुब्ह शाम जो शख्स उसे पढेगा अल्लाहपाक उसकी हर दुआ कबूल करेगा।

रावी (हज़. समुरह रदि.)ने कहा के मैंने हज़. अब्दुल्लाह इब्ने सलाम रदि. से मुलाकात की।

मैंने कहा तुम्हें एक हदीस न सुनाउं?

जिसे मैंने नबीए पाक ﷺ और हज़रत अबुबक्र रदि. ओर हज़रत उमर रदि. से बार बार सुनी है।

उन्होंने कहा, हां सुनाइए,

मैंने यह हदीस बयान की, उन्होंने कहा कसम खुदाकी, मेरे मां बाप कुर्बान हो अल्लाह के रसुल ﷺ पर!

ये वह कलिमात है जो अल्लाहतआलाने हज़रत मुसा अल. को अता किये थे

वोह हर दिन सात मरतबह उसे पढते थे। जो कोई सवाल अल्लाहतआला से करते अल्लाहपाक उसे

पूरा फरमा देते। (तरगीब १/२६१)

﴾५५﴿ दुआ मांगने से पहले पढने की दुआ

हज़रत सइद इब्ने जुबैर रदि. फरमाते है के मुझे कुर्आने करीम की एक ऐसी आयत मअलूम है के उसको पढ कर आदमी जो दुआ करता है कबुल होती है फिर यही आयत बतलाइ।

اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَ الْأَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ۝

(मआरिफुल कुर्आन ७/५६६, कुरतुबी: १५/२६५)

रोज़ी में बरकत और कर्ज़ की अदायगी ओर फकीरी और मोहताजी से हिफाज़त की दुआएं

﴾५६﴿ कर्ज़ की अदायगी के लिये

اَللّٰهُمَّ فَارِجَ الْهَمِّ ، كَاشِفَ الْغَمِّ مُجِيبَ دَعْوَةِ الْمُضْطَرِّينَ رَحْمٰنَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَرَحِيمَهُمَا ، أَنْتَ تَرْحَمُنِي ، فَارْحَمْنِي بِرَحْمَةٍ تُغْنِينِي بِهَا عَنْ

رَّحْمَةٍ مَنْ سِوَاكَ.

हज़रत आइशा रदि. फरमाती है के हज़रत अबुबक्र सिद्दीक रदि. मेरे पास आये और मुझसे फरमाया: के आप ﷺ ने मुझे एक दुआ सिखलाइ है वह आपने सुनी? मैंने पुछा वह दुआ क्या है? फरमाया: हज़रत इसा अल. अपने अस्हाब को वह दुआ सिखलाया करते थे, अगर किसी पर पहाड जितना सोना कर्ज़ हो तो वह भी अल्लाह तआला उससे अदा करवा देगा, हज़रत अबूबक्र रदि. ने फरमाया: मेरे उपर कुछ कर्ज़ था, वह कर्ज़ मुझे भारी मअलूम हो रहा था, तो में यह दुआ मांगता रहा, बस अल्लाह तआला ने मेरे कर्ज़ की अदायगी का बंदोबस्त कर दिया। हज़रत आइशा रदि. फरमाती है के अस्मा बिन्ते उमैस रदि. का मेरे ज़िम्मे एक दीनार और तीन दिरहम कर्ज़ था, जब वह मेरे पास आती तो मुझे उनका मुंह देखते हुवे भी शर्म आती, मेरे पास कर्ज़ा चुकाने के लिये कुछ नहीं था। तो में यह दुआ मांगती रही, थोडा ही वक्त गुज़रा के अल्लाह तआला ने मुझे तो ज़बरदस्त (माली ए'तेबार से) नवाज़ा, जो न सदके का था न किसीकी मीरास थी। मेरा कर्ज़ भी अल्लाह तआला के करम से अदा हो गया और घरवालों को भी अच्छी तरह तकसीम किया।

और अब्दुर्ररहमान (हज़. आइशा रदि. के भाई) की बेटी को मैंने तीन अवकिया चांदी का ज़ेवर पहनाया। और बहुत ज्यादा बच गया।

(अलमुस्तदरकः ह.नं.१९४१;२/१९८)

﴾५७﴿ सुब्ह के वक्त यासीन शरीफ पढने का फायदा

हज़रत अता इब्ने अबी रबाह ताबिइ (रह.) फरमाते है के रसुलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया जो आदमी सुब्ह सुरए यासीन शरीफ पढे तो उस की ज़रूरतें पुरी की जाएंगी। (मिश्कात १/१८९)

﴾५८﴿ कर्ज़ से छुटकारा पानेका मुजर्रब वज़ीफा

اَللّٰهُمَّ إِنِّىْ أَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَ الْحُزْنِ، وَ أَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَأَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْجُبْنِ وَ الْبُخْلِ، وَ أَعُوْذُ بِكَ مِنْ غَلَبَةِ الدَّيْنِ وَ قَهْرِ الرِّجَالِ.

फज़ीलतः हज़रत अबु सइद खुदरी रदि. फरमाते है के एक मरतबह हुज़ुर अकदस ﷺ मस्जिदमें दाखील हुए, तो वहां एक अन्सारी सहाबी को देखा जिनको अबू उमामह केहते है रसुलुल्लाह ﷺ नेः पुछा अबू उमामह क्या हुवा? के आप नमाज़ के वक्त के अलावा मस्जिद में बेठे है? उन्होंने जवाब दीयाः या रसुलल्लाह मुझ पर फिकरों ओर कर्ज़ों का हुजुम हो गया है, हुज़ुर ﷺ ने

फरमायाः क्या में तुमको वह कलिमात न सीखाउं जब तुम उन्हें पढो तो तुम्हारे गम दुर हों। और कर्ज़ा अदा हो, उन्होंने कहाः ज़रूर या रसुलल्लाह! रसुलुल्लाह ﷺ ने फरमायाः के सुब्ह शाम यह (उपरवाले) कलिमात पढा करो, वह सहाबी फरमाते है के में ने ऐसा ही किया तो अल्लाहतआला ने मेरी परेशानी को दूर कर दीया और मेरे कर्ज़ों को मुझसे अदा करवा दीया।

(अबुदावुदः १/२१७)

﴾५९﴿ रोज़ी में बरकत और ज्यादती

हज़रत फातिमह रदि. से मरवी है के आप रदि. ने नबीए करीम ﷺ की खिदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया के या रसुलल्लाह! इन मलाइकह की खुराक तहलील (ला इलाह इल्लल्लाह) ओर तस्बीह (सुब्हानल्लाह) और तहमीद (अल्हम्दु लिल्लाह) है, लेकीन हमारी खुराक क्या है? आप ﷺ ने इर्शाद फरमायाः कसम है उस ज़ात की जिस ने मुझे हक के साथ मब्उस फरमाया; के आले मुहम्मद के घर में तीस दिन से आग का शोअला (अंगारा) नहीं जला। अगर तुम्हारी मरज़ी हो तो में तुम्हारे लीये पांच बकरीयों का हुकम करदुं ओर अगर तुम चाहो तो में तुमको पांच कलिमात बतलादुं, जो हज़रत जिब्राईल अल. ने मुझे सिखलाए थे। हज़रत फातिमह रदि. ने फरमाया नहीं

मुझे तो वह पांच दुआएं ही सिखला दीजीये, जो हज़रत जिब्रईल अल. ने सिखलाइ थी। आपने फरमाया के यह पढो।

يَا أَوَّلَ الْأَوَّلِيْنَ وَ يَا آخِرَ الْاٰخِرِيْنَ وَ يَا ذَا الْقُوَّةِ الْمَتِيْنِ وَ يَا رَاحِمَ الْمَسَاكِيْنِ وَ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

(कन्जुल उम्माल ह.नं. ५०२६, २/६७०)

﴾६०﴿ जिस दुआ के पढने से पहाड बराबर कर्ज़ हो तो भी अदा हो जाएगा

اَللّٰهُمَّ اكْفِنِيْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَ اغْنِنِيْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ.

फज़ीलत: हज़रत अली रदि. की रिवायत का खुलासा है। के यह दुआ पढने से कर्ज़ अदा हो जाता है चाहे सबीर पहाड के बराबर कर्ज़ हो। (तिरमीज़ी २/१९६)

नोट : सबीर एक बडे पहाडका नाम है।

इस दुआ को हर फर्ज़ नमाज़ के बाद सात मरतबह पढना चाहिये।

﴾६१﴿ मालदारी हासिल करने के लिये

हदीसे पाक से मअलूम होता है के जो शख्स रोज़ाना सौ मरतबह यह दुआ पढे।

لَآ إِلٰـهَ إِلَّا اللّٰهُ الْمَلِکُ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ.

तो उसको मालदारी हासिल होगी।

(कन्जुलउम्माल ह.नं.३८९६ २/२३३)

﴾६२﴿ रोज़ी में बरकत के लिये

تَـوَكَّـلْـتُ عَـلَـى الْـحَـيِّ الَّذِيْ لَا يَمُوْتُ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّـذِيْ لَـمْ يَتَّـخِـذْ وَلَـداً وَّ لَـمْ يَـكُـنْ لَـهٗ شَرِيْكٌ فِيْ الْمُلْكِ وَ لَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَ كَبِّرْهُ تَكْبِيْراً.

हदीस शरीफ से मअलूम होता है के इन कलिमात को पाबंदी से पढते रेहने से तंगदस्ती दूर हो जाती है।

(मआरिफुल कुर्आन: ५/५४३)

﴾६३﴿ फकीरी और मोहताजी से हिफाज़त के लिये

اَلـلّٰـهُـمَّ إِنِّـىْ أَعُـوْذُ بِـکَ مِـنَ الْـكُـفْرِ وَ الْفَقْرِ، اَللّٰهُمَّ إِنِّىْ أَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، لَآ إِلٰـهَ إِلَّا أَنْتَ.

(तीन मरतबह)

(अबु दावुद : २/६९४)

सुब्ह–शाम की कुछ खास दुआएं

﴿٦٤﴾ इस्तिग्फार का सरदार

اَللّٰهُمَّ أَنْتَ رَبِّي لَآ إِلٰـهَ اِلا أَنْتَ خَلَقْتَنِي وَأَنَا عَبْدُكَ وَ أَنَا عَلٰى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ أَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ أَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَ اَبُوْءُ لَكَ بِذَنْبِى فَاغْفِرْلِي فَإِنَّهٗ لا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ إِلَّا أَنْتَ.

ये सय्यीदुल इस्तिग्फार है, यअनी अपने गुनाहो से मुआफी मांगने के लीये जीतने अल्फाज़ है उनमें यह सरदारकी हयसीयत रखता है। लीहाज़ा इस दुआको मांगते हुए खुब नदामत हो और आंखो से आंसु टपके। और दिल से मुआफी चाहे। के ए अल्लाह आज तु मुआफ फरमादे।

फज़ीलत :– जो शख्स इस दुआको इसकी फज़ीलत पर यकीन रखते हुवे सुब्ह पढे और शाम से पहले वफात हो जाए तो उसके लीये जन्नत वाजीब हो जाएगी। और जिसने इसकी फज़ीलत पर यकीन रखते हुवे शामको यह दुआ पढी और सुब्ह से पहले वफात

हो जाए तो उसके लीये जन्नत वाजीब हो जाएगी।

(बुखारी : २/९३३)

﴿६५﴾ सुब्ह शाम पढने की एक खास दुआ

اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوَاتِ وَ الْأَرْضِ، عَالِمَ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ، أَنْتَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ وَ مَلِيْكُهٗ، أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰـهَ إِلَّا أَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ وَ أَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ، أَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ، وَ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَ شِرْكِهٖ، وَ أَنْ أَقْتَرِفَ عَلٰى نَفْسِيْ سُوْءً ا أَوْ أَجُرَّهٗ إِلٰى مُسْلِمٍ.

(मुस्नदे अहमद हदीस नं. ८२; १/२५)

फज़ीलत: हज़. अबुबक्र सिद्दीक रदि. ने फरमाया: अल्लाह के रसुल ﷺ ने मुझे हुकम दिया के में सुब्ह और शाम और रात को बिस्तर पर सोते वक्त यह (उपरवाली) दुआ मांगता रहुं।

﴿६६﴾ दिन ओर रात की नेअमतों का शुक्रियह अदा करने की दुआ

सुब्ह में यह दुआ पढे।

اَللّٰهُمَّ مَا أَصْبَحَ بِىْ مِنْ نِعْمَةٍ أَوْ بِأَحَدٍ مِنْ خَلْقِكَ

فَمِنکَ وَحۡدَکَ لَا شَرِیۡکَ لَکَ، فَلَکَ الۡحَمۡدُ وَ لَکَ الشُّکۡرُ.

नोट: शाम के वक्त यह दुआ इस तरह पढे।

اَللّٰھُمَّ مَا أَمۡسٰی بِیۡ مِنۡ نِعۡمَةٍ أَوۡ بِأَحَدٍ مِنۡ خَلۡقِکَ فَمِنکَ وَحۡدَکَ لَا شَرِیۡکَ لَکَ، فَلَکَ الۡحَمۡدُ وَ لَکَ الشُّکۡرُ.

फज़ीलत: हुज़ुर ﷺ ने फरमाया जो सुब्ह को यह दुआ पढे तो उसने आज के दिन का शुक्रियह अदा कर दीया ओर जो शामको पढे तो उसने रात की नेअमतों का शुक्रियह अदा कर दीया। (मिश्कात १/२११) जो शख्स यह चाहता हे के उस पर नेअमतें बहुत ज्यादा हो ओर मवजुदा नेअमतें हमेशा रहें तो उसको चाहिये के ज्यादा से ज्यादा हर हाल में शुक्रियह अदा करे।

(६७) इस्तिगफार का खास फायदा

أَسۡتَغۡفِرُ اللّٰهَ الَّذِيۡ لَآ إِلٰـهَ إِلَّا هُوَ الۡحَيُّ الۡقَيُّوۡمُ وَ أَتُوۡبُ إِلَيۡهِ.

एक हदीस में आया है के जो सुब्ह में और अस्र के बाद यह दुआ तीन मरतबह पढे उसके गुनाह मुआफ

हो जाते है। ख्वाह समंदर के बराबर हों।

(तरगीब वतरहीब:१/३०७ दारे एहयाउत्तुरासिल अरबी)

नोट: सुब्ह–शाम कुल हुवल्लाह कुल अउज़ु बिरब्बील फलक और कुल अउज़ु बिरब्बीन्नास तीन–तीन मरतबह पढ लेना चाहिये।

﴾६७﴿ सुब्हानल्लाह, अल्हम्दुलिल्लाह, लाइलाह इल्लल्लाह, अल्लाहु अकबर १०० मरतबह पढने का सवाब

हदीस शरीफ में आया है के जो शख्स सुब्ह–शाम सौ मरतबह सुब्हानल्लाह पढे तो उसको सौ हज का सवाब मिलता है, और जो सौ मरतबह अल्हम्दुलिल्लाह कहे तो उसको अल्लाह तआला के रास्ते में १०० घोडे देने का सवाब मिलता है, या सौ गज़वात का सवाब मिलता है। और सुब्ह–शाम १०० मरतबह ला इलाह इल्लल्लाह पढने का सवाब हज़रत इस्माईल अल. की अवलाद में से १०० गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलता है। और सौ मरतबह सुब्ह शाम अल्लाहु अकबर पढे तो उसके जितना सवाब कोई हासिल नहीं कर सकता सिवाये उस शख्स के जो इसको पढे। या इससे ज्यादा पढ लेवे।

(तिरमिज़ी: २/१८५)

सोने के वक्त की दुआएं और आअमाल

﴾٦٩﴿ सोते वक्त का पेहला अमल

पहले आयतुल कुर्सी पढे।

﴾٧٠﴿ दूसरा अमल

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ۝ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

آمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ كُلٌّ آمَنَ بِاللّٰهِ وَ مَلَائِكَتِهٖ وَ كُتُبِهٖ وَ رُسُلِهٖ، لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ وَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَ أَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَ إِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَ عَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَسِيْنَآ أَوْ اَخْطَأْنَا رَبَّنَا وَ لَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَ لَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ وَ اعْفُ عَنَّا وَ اغْفِرْ لَنَا وَ ارْحَمْنَا أَنْتَ مَوْلٰينَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝

यह सुरए बकरह की आखरी दो आयतें है। अहादीसे सहीहह मोअतबरह में इन दो आयतो के बडे बडे फज़ाइल मज़कूर है। रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया जिस शख्स ने रात को यह दो आयतें पढ ली तो यह उसके लीये काफी है।

और इब्ने अब्बास रदि. की रिवायत में है के रसुलुल्लाह ﷺ ने फरमाया के अल्लाहतआलाने दो आयतें जन्नत के खज़ाइन में से नाज़िल फरमाई है। जिस को तमाम मख्लूक की पैदाइश से दो हज़ार साल पहले खुद रहमान ने अपने हाथ से लीख दीया था। जो शख्स इशा की नमाज़ के बाद पढ ले तो वह उसके लीये "कियामुल्लयल" यअनी तहजजुद के बराबर हो जाती है और मुस्तदरके हाकीम और बयहकी की रिवायत में है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया के अल्लाहतआलाने सुरए बकरह को इन दो आयतो पर खत्म फरमाया है, जो मुझे उस खज़ाना-ए-खास से अता फरमाई है जो अर्श के नीचे है। इस लीये तुम खास तोर पर इन आयतों को सीखो और अपनी ओरतों, बच्चों को सीखावो। इसी लीये हज़रत फारूके आज़म और अली मुर्तज़ा (रदि.)ने फरमाया के कोई आदमी जिसको कुछभी अकल हो वह सुरए बकरह की इन दो आयतों को पढे बगैर न सोएगा।

(मआरिफुल कुर्आन १/६३१)

﴾७१﴿ तीसरा अमल

हज़रत नवफल रदि. ने दरख्वास्त की के या रसूलल्लाह ﷺ मुझे एसी चीज़ बता दें के जिसको में सोते वक्त अपने बिस्तर पर पढ़ुं आप ﷺ ने फरमाया सुरए काफिरून पढो, (यअनी कुल या अय्युहल काफीरून वाली सूरत) इस लीये के उसमें शिर्क से बेज़ारी है। (तिरमीज़ी २/१७७)

﴾७२﴿ चौथा अमल

फिर कुल हुवल्लाह, कुल अउज़ु बिरब्बिल फलक फिर कुल अउज़ु बिरब्बिन्नास पढ लेवे और पूरे बदन पर दम कर लेवे। फिर दूसरी मरतबह तीनों सूरतें पढ कर पूरे बदन पर दम करे। फिर तीसरी मरतबह भी तीनों सूरतें पढ कर पूरे बदन पर दम करे। दम करनें की इब्तिदा चेहरे और सामने की तरफ से करे।

﴾७३﴿ पांचवा अमल ; इस्तिगफार का खास फायदा

أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِيْ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ وَ أَتُوْبُ إِلَيْهِ.

हदीस शरीफ मे है के जो शख्स बिस्तर पर ठिकाना लेते वक्त (सोते वक्त) यह तीन मरतबह पढे अल्लाहतआला उसके गुनाहोंको मुआफ फरमा देंगे। अगरचे समंदर की झाग के बराबर हो, अगर चे दरख्त

के पत्तों और रेत के ढेर के बराबर हो, अगरचे दुनिया के दिनों की ताअदाद के बराबर हों।

(तिरमिज़ी २/१७७)

﴾७४﴿ छठठा अमल

سُبْحَانَ اللّٰه ३३ मरतबह

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ३३ मरतबह

اَللّٰهُ اَكْبَر ३४ मरतबह

(अबू दावुद : २/६९०)

﴾७५﴿ बहुत परेशानी और रात को नींद न आने के वक्त पढने की दुआ

सोया (एक सब्ज़ी का नाम है, पालक का पत्ता सीधा होता है ओर सोया की ज़रा ज़रा सी शाखें) करीब रखकर सोया करे, इन्शाअल्लाह नफा होगा। और सोने से पहले यह (नीचेवाली) दुआ पढ कर अपने उपर दम करे। (मकतुबाते फकीहुल उम्मत १/१३४)

اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوَاتِ السَّبْعِ وَ مَا أَظَلَّتْ، وَرَبَّ الْأَرْضِيْنَ وَ مَا أَقَلَّتْ، وَ رَبَّ الشَّيَاطِيْنِ وَ مَا أَضَلَّتْ، كُنْ لِيْ جَارًا مِّنْ شَرِّ خَلْقِكَ كُلِّهِمْ جَمِيْعًا أَنْ يَفْرُطَ عَلَيَّ أَحَدٌ مِّنْهُمْ أَوْ أَنْ يَّبْغٰى، عَزَّ

جَارُکَ وَ جَلَّ ثَنَائُکَ وَ لَآ اِلٰہَ غَیْرُکَ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ.

(तिरमिज़ी: २/१९२)

﴾७६﴿ नींद में बेचेनी ओर गभराहट की दुआ

اَعُوْذُ بِکَلِمَاتِ اللّٰہِ التَّآمَّاتِ مِنْ غَضَبِہٖ وَ عِقَابِہٖ وَ شَرِّ عِبَادِہٖ وَ مِنْ ھَمَزَاتِ الشَّیٰطِیْنِ وَ اَنْ یَّحْضُرُوْنِ.

(मिश्कात १/२१७)

﴾७७﴿ बुरा या अच्छा ख्वाब देखे तो यह अमल करे

हदीस शरीफ में है के जब तुम में से कोई शख्स बुरा ख्वाब देखे तो अपनी बाइं जानिब(डाबी बाजु) में तीन मरतबह थुत्कार दे (यअनी थू-थू करदे।) और शयतान के शर से और ख्वाब के शर से अल्लाहतआला की पनाह चाहे, ओर अपना पेहलु (करवट) जिस पर (ख्वाब के वक्त सोया हुवा) था बदल दे। और किसीको यह ख्वाब न बताए। इस लिये के वह कोई नुकसान नहीं पहोंचाता।

ओर अच्छा ख्वाब हो तो अपने से मुहब्बत रखनेवाले के अलावा कीसी से उस ख्वाब का ज़िक्र न करे।

(मुस्लीम ह.नं. २२६१ पे.१००० मतबूआ दारे इब्ने हज़्म बैरूत)

﴾७८﴿ नींद के लीये बेहतरीन दुआ

हज़रत ज़ैद इब्ने साबीत रदि. ने फरमाया मेने हुज़ूर ﷺ को शिकायत की के मुझको नींद नही आती तो आप ﷺ ने इर्शाद फरमाया के यह दुआ पढो।

اَللّٰهُمَّ غَارَتِ النُّجُوْمُ، وَ هَدَأَتِ الْعُيُوْنُ وَ أَنْتَ حَيٌّ قَيُّوْمٌ لَّا تَأْخُذُكَ سِنَةٌ وَّ لَا نَوْمٌ، يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ! أَهْدِئْ لَيْلِيْ وَ أَنِمْ عَيْنِيْ.

में ने यह दुआ पढी तो अल्लाहतआलाने मेरी इस तकलीफ को दूर कर दीया।

(इब्नुस्सुन्नी हदीस नं. ७४९ पेज नं.२२२)

जहन्नम की आग अज़ाबे कब्र और कुफ्र से हिफाज़त की दुआएं

﴾७९﴿ जहन्नम से छुटकारे का वज़ीफा

اَللّٰهُمَّ إِنِّىٓ أَصْبَحْتُ أُشْهِدُكَ وَ أُشْهِدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ وَ مَلَائِكَتَكَ وَ جَمِيْعَ خَلْقِكَ أَنَّكَ أَنْتَ اللّٰهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ وَ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَ رَسُوْلُكَ.

फज़ीलत: हदीस शरीफ में है के जो शख्स इस दुआ को सुब्ह चार मरतबह पढ लेगा तो अल्लाह तआला उसके पूरे बदन को जहन्नम से आज़ादी नसीब फरमाएंगे। (अबु दावुद शरीफ २/६९१)

और शाम को यह दुआ चार मरतबह इस तरह पढे :–

اَللّٰهُمَّ إِنِّى أَمْسَيْتُ، أُشْهِدُكَ وَ أُشْهِدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ وَ مَلَائِكَتَكَ وَ جَمِيْعَ خَلْقِكَ أَنَّكَ أَنْتَ اللّٰهُ، لَآ إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ وَ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَ رَسُوْلُكَ.

﴿٨٠﴾ जहन्नम से छुटकारे की दुआ

फर्ज़ और मगरिब की नमाज़ के बाद यह दुआ मांगे

اَللّٰهُمَّ أَجِرْنِي مِنَ النَّارِ. (सात मरतबह)

फज़ीलत: हज़रत हारिस रदि. से रिवायत है के आप ﷺ ने मेरे साथ कान में बात फरमाई और फरमाया जब तु मगरिब की नमाज़ से फारिग हो जाए तो (कीसी से बात करने से पहले) सात मरतबह यह दुआ मांगा कर, जब तुने यह दुआ मांग ली और उसी रात तेरा इन्तेकाल हुवा तो तेरे लीये आग से छुटकारा लिखा जायेगा, और जब तु फज्र की नमाज़ पढ ले तब भी यह

दुआ मांगा कर अगर उसी दीन तेरा इन्तेकाल हुवा तो तेरे लीये जहन्नम से छुटकारा लिखा जायेगा।

(अबुदावुद २/६९३)

﴾८१﴿ अज़ाबे कब्रसे हिफाज़त के लीये एक दुआ

لَآ إِلٰـهَ إِلَّا اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ.

भी है जिसको रोज़ाना सौ मरतबह पढने से जहन्नम से छुटकारा नसीब होगा। (कन्जुल उम्माल: ह.नं. ३८९६, २/२३३)

﴾८२﴿ कुफ्र मोहताजी ओर अज़ाबे कब्र से पनाह मांगने की दुआ

اَللّٰهُمَّ إِنِّىْ أَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَ الْفَقْرِ، اَللّٰهُمَّ إِنِّىْ أَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، لَآ إِلٰـهَ إِلَّا أَنْتَ. (तीन मरतबह)

(अबु दावुद : २/६९४)

﴾८३﴿ अज़ाबे कब्र से हिफाज़त की एक और दुआ

اَللّٰهُمَّ إِنِّىْ أَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْبُخْلِ وَأَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْجُبْنِ وَ أَعُوْذُ بِكَ أَنْ أُرَدَّ إِلٰى اَرْذَلِ الْعُمُرِ وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ الْقَبْرِ.

नसइ में बरिवायत (हज़रत सअद रदि.) मनकूल है के रसूलुल्लाह ﷺ यह दुआ बकसरत मांगा करते थे।

और इस हदीस के रावी हज़रत सअद रदि. बडे एहतेमाम से यह दुआ अपनी सब अवलाद को याद कराते थे। (मआरिफुल कुर्आनः ६/२४१, कन्ज़ुल उम्मालः ह.नं.५०९५; २/६९०)

कुछ खास खास दुआएं

﴾८४﴿ हज़. मुसा अल. की दुआ

हज़रत मुसा अ.स. की दुआ जिसमें पांच चीज़ों का सवाल किया गया है।

رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي وَ يَسِّرْ لِي اَمْرِي وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِي يَفْقَهُوْا قَوْلِي .

जब अल्लाह तआला ने हज़. मुसा अल. को नुबुव्वत अता फरमाई तो हज़. मुसा अल. ने पांच दुआएं मांगी, जिसको अल्लाह तआला ने कुर्आन शरीफ में बयान किया, उसमें से तीन दुआ हर बंदे को मांगते रेहना चाहिये। वह दुआएं यह है।

(१) ए अल्लाह मेरे सीने को उलूम के लिये खोल दे।

(२) मेरे काम को आसान कर दे।

(३) मेरी ज़ुबान की गिरह को खोल दे ताके लोग मेरी बात समझ सकें। (मफहूमे मआरिफुल कुर्आनः ६/७६)

﴿८५﴾ तमाम मकासिद के शुरू में यह दुआ पढे

وَاجْعَلْ لِيْ مِنْ لَّدُنْکَ سُلْطٰنًا نَصِيْرًا.

(कुर्तुबी: १०/३१३)

﴿८७﴾ कयामत के रोज़ हुज़ूर ﷺ की शफाअत नसीब होगी

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ تَسْلِيْماً.

(या कोई भी दुरूद)

हज़रत अबु दरदा रदि. फरमाते है के आप ﷺ ने फरमाया के जो शख्स सुब्हो शाम दस मरतबह मुझ पर दुरूद शरीफ पढ लिया करेगा वह कयामत के दिन मेरी शफाअत को पाएगा। (मजमउज़्ज़वाइद: १०/१२०)

﴿८८﴾ दुश्मन की नज़र से छुपे रेहने का एक अमल

हज़रत कअब रदि. फरमाते है के रसुलुल्लाह ﷺ जब मुश्रिकीन की आंखो से छुपना चाहते तो कुर्आन की तीन आयतें पढ लेते थे।

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔

(१) إِنَّا جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَ فِيْ آذَانِهِمْ وَقْرًا، وَ إِنْ تَدْعُهُمْ إِلَى الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْا

إِذًا أَبَدًا ۝ (सुरए कहफ आ. ५७)

(२) أُولٰئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَ سَمْعِهِمْ وَ أَبْصَارِهِمْ وَ أُولٰئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ.

(सुरए नहल आ. १०८)

(३) أَفَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلٰهَهُ هَوَاهُ وَ أَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ وَّ خَتَمَ عَلٰى سَمْعِهٖ وَ قَلْبِهٖ وَ جَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ غِشَاوَةً، فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْ بَعْدِ اللّٰهِ أَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝ (सुरए जासीयह आ. २३)

(मआरिफुल कुर्आन ५/४९१,कुर्तुबी: १०/२६९,२७०)

और इस सिलसिले में दुसरा अमल यह भी है

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ۝ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

يٰسٓ ۝ وَ الْقُرْآنِ الْحَكِيْمِ ۝ إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ۝ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ أُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غَافِلُوْنَ ۝ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰٓى أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ إِنَّا جَعَلْنَا فِيْ أَعْنَاقِهِمْ

أَغْلَالًا فَهِيَ إِلَى الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ ۝ وَ جَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَّ مِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ۝

सीरत की किताबों में है के आप ﷺ जिस रात को हिजरत के लिये निकले तो हज़रत अली रदि. को अपने बिस्तर पर सुला दिया (बाहर दुश्मन आप ﷺ को कत्ल करने के लीये घर का घेरा डालकर ताक में खडे थे) आप ﷺ ने निकलकर हाथ में मुठ्ठीभर मिट्टी ली और अल्लाहतआलाने दुश्मनोंकी आंखो से आपको छुपा दीया, तो वह लोग आप ﷺ को देख न पाये। हुज़ुर ﷺ सुरए यासीन की उपरवाली आयतों को पढते हुए उनके सरो पर मिट्टी डालने लगे। यहां तक के जब आप ﷺ इन आयात से फारीग हो चुके तो कोई आदमी भी ऐसा नहीं बचा था जिस के सर पर मिट्टी न पहोंची हो। फिर हुज़ुर ﷺ को जहां तशरीफ ले जाना था वहां पर रवाना हो गये।

(तफसीरे कुर्तुबी १०/२६९,२७०)

﴾८९﴿ <u>जब बच्चा बोलना सीखे तो उसको सबसे पहले क्या याद करावे?</u>

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ

شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيرًا.

हदीस शरीफ में है के बनी अब्दुल मुत्तलिब में से कोई बच्चा बोलने के काबिल हो जाता तो आप ﷺ उसको यह आयत सिखलाते। (कुरतुबी: १०/३४५)

﴾९०﴿ कअबह के परदों से चिमट कर मांगने की दुआ

يَا وَاحِدُ يَا أَحَدُ لَا تُزِلْ عَنِّي نِعْمَةً أَنْعَمْتَ بِهَا عَلَيَّ.

(कन्ज़ूल उम्माल: ह.नं.५०६३; २/६८२,६८३)

﴾९१﴿ खुशी के मौके की दुआ और नापसंदीदह चीज़ के वक्तकी दुआ

हदीस शरीफ में है के रसुलुल्लाह ﷺ को कोई चीज़ खुशी की पेश आती तो यह दुआ पढते

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْمُنْعِمِ الْمُتَفَضِّلِ الَّذِيْ بِنِعْمَتِهٖ تَتِمُّ الصَّالِحَاتُ.

ओर नापसंद वाकिअह पेश आने के वक्त यह दुआ पढते।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَالٍ .

(कन्ज़ुल्उम्माल २/६७१)

﴾९२﴿ खटमल–पिस्सु–मांकड–मच्छर–मख्खी –बिच्छु से हिफाज़त की दुआ

हज़. अबुज़र रदि. से रिवायत है के जब तुमको पिस्सु तकलीफ पहोंचावे तो पानीका भरा हुवा एक प्याला लो, फिर निचेवाली आयत सात मरतबह पढ कर के दम कर दो

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ۝ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

وَمَا لَنَا أَنْ لَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰينَا سُبُلَنَا وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَآ آذَيْتُمُوْنَا ط وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ.

फिर निचेवाली दुआ पढो

اِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِيْنَ فَكُفُّوْ شَرَّكُمْ وَاَذَاكُمْ عَنَّا.

फिर पानी को बिस्तर के चारों तरफ छिडक दो। तो उसकी तकलीफ से हिफाज़त होगी (और आराम से रात गुज़ारोगे)

आफ्रीका के एक गवर्नर ने हज़. उमर बिन अ.अज़ीज़ रह. को जीवजंतु और बिच्छुओं के काटने की शिकायत की तो आपने उपरवाली आयत सुब्ह–शाम पढने की तलकीन फरमाई। (अलमकासिदुल हसनह: पेज: ६४१ ह.नं. १२९०)

﴿९३﴾ एक खास दुआ जिसके पढने का घरवालों को पाबंद बनाने का खुद हुज़ूर ﷺ ने हुकम दिया

हुज़ूर ﷺ ने हज़. ज़ैद इब्ने साबित रदि. को निचेवाली दुआ सिखाई, और युं हुकम दिया के रोज़ाना सुब्ह में अपने घरवालों को इस दुआ के पढने का पाबंद बनादो।

لَبَّيْکَ اَللّٰهُمَّ لَبَّيْکَ، لَبَّيْکَ وَسَعْدَيْکَ وَالْخَيْرُ فِيْ يَدَيْکَ وَمِنْکَ وَبِکَ وَإِلَيْکَ اَللّٰهُمَّ مَا قُلْتُ مِنْ قَوْلٍ أَوْ نَذَرْتُ مِنْ نَذْرٍ أَوْ حَلَفْتُ مِنْ حَلْفٍ فَمَشِيَّتُکَ بَيْنَ يَدَيْکَ مَا شِئْتَ کَانَ وَمَا لَمْ تَشَأْ لَمْ يَکُنْ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِکَ إِنَّکَ عَلٰى کُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ اَللّٰهُمَّ وَمَا صَلَّيْتُ مِنْ صَلَاةٍ فَعَلٰى مَنْ صَلَّيْتَ وَمَا لَعَنْتُ مِنْ لَعْنَةٍ فَعَلٰى مَنْ لَعَنْتَ إِنَّکَ أَنْتَ وَلِيِّيْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ تَوَفَّنِيْ مُسْلِماً وَّ اَلْحِقْنِيْ بِالصَّالِحِيْنَ. أَسْأَلُکَ اَللّٰهُمَّ الرِّضَا بِالْقَضَاءِ وَبَرْدَ الْعَيْشِ بَعْدَ الْمَوْتِ وَ لَذَّةَ النَّظْرِ إِلٰى

وَجْهِكَ وَشَوْقاً إِلٰى لِقَائِكَ فِيْ غَيْرِ ضَرَّآءَ مُضِرَّةٍ وَّ لَا فِتْنَةٍ مُّضِلَّةٍ. أَعُوْذُ بِكَ اللّٰهُمَّ أَنْ أَظْلِمَ أَوْ أُظْلَمَ اَوِ اعْتَدٰى أَوْ يُعْتَدٰى عَلَيَّ أَوْ اَكْتَسِبَ خَطِيْئَةً مُّخْطِئَةً أَوْ ذَنْباً لَا يُغْفَرُ. اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوَاتِ وَالْأَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ ذُوْ الْجَلَالِ وَ الْإِكْرَامِ فَإِنِّى أَعْهَدُ إِلَيْكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَ أُشْهِدُكَ وَكَفٰى بِكَ شَهِيْداً إِنِّى أَشْهَدُ أَنْ لَّآ إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ. لَكَ الْمُلْكُ وَلَكَ الْحَمْدُ وَأَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ وَأَشْهَدُ أَنَّ وَعْدَكَ حَقٌّ وَلِقَآئَكَ حَقٌّ وَالْجَنَّةَ حَقٌّ وَالسَّاعَةَ آتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا وَأَنَّكَ تَبْعَثُ مَنْ فِيْ الْقُبُوْرِ وَأَشْهَدُ أَنَّكَ اِنْ تَكِلْنِيْ إِلٰى نَفْسِيْ تَكِلْنِيْ إِلٰى ضَيْعَةٍ وَّعَوْرَةٍ وَّذَنْبٍ وَّ خَطِيْئَةٍ وَّ

إِنِّى أَنْ أَثِقَ إِلَّا بِرَحْمَتِكَ فَاغْفِرْلِي ذَنْبِي كُلَّهُ إِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ وَتُبْ عَلَيَّ إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ. (मजमउज़्ज़वाइद: १०/११३)

नोट: जामिअह डाभेल के कुतुबखाने के नुस्खे में इसी तरह ضَيْعَةٍ का लफज़ हे। अगरचे मश्हूर ضَعْفٍ हे।

﴾९४﴿ हर मजलिस के आखिर में पढने की दुआ

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ، وَ سَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ، وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ.

(सुरए साफफात १८०,१८१,१८२)

अलग अलग तफसीर में इमाम बगवी के हवाले से हज़रत अली रदि. का यह कोल मन्कूल है के, जो शख्स यह चाहता हो के कयामत के रोज़ उसे भरपूर पैमाने से अज्र (बदला और सवाब) मिले उसे चाहीये के वह अपनी हर मजलिस के आखिर में यह दुआ पढे। (तफसीर इब्ने कसीर)

(मआरिफुल कुर्आन ७/४८८, कन्ज़ुल उम्माल: ह.नं.४९६२; २/६३९)

الدُّعَاءُ مُخُّ العِبَادَةُ

दुआ इबादत का मग्ज़ है

रात–दिन पेश आनेवाली जरूरियात से मुतअल्लिक

मस्नून दुआएं

सहीह अहादीस की रोशनी में

मकातिबे कुर्आनिय्यह और मदारिसे दीनीय्यह के निसाब में इस हिस्से को ज़रूर दाखिल किया जाए। इन्शाअल्लाह बहोत फायदा होगा। और हर इमानवाले मर्द–औरत इन दुआओं को याद करके पढने का एहतेमाम करें।

﴾१﴿ सौ कर उठने की दुआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰه الَّذِیْ اَحْیَانَا بَعْدَ مَآ اَمَاتَنا وَاِلَیْہِ النُّشُوْرُ.

(बुखारी शरीफ : २/९३४)

﴾२﴿ बयतुलखला जाते वक्त की दुआ

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِکَ مِنَ الْخُبُثِ وَ الْخَبَائِثِ. (तिरमिज़ी : १/७)

﴾३﴿ बयतुलखला से निकलते वक्त की दुआ

غُفْرَانَکَ ...اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَذْهَبَ عَنِّيْ الْأَذٰى

وَ عَافَانِي. (इब्ने माजह : २६,तिरमिज़ी : १/७)

﴾४﴿ सुब्ह के वक्त की दुआ

أَصْبَحْنَا وَ أَصْبَحَ الْمُلْکُ لِلّٰهِ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ لَآ اِلٰهَ

اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لا شَرِیکَ لَهٗ اَللّٰھُمَّ اِنِّی اَسْئَلُکَ

خَیْرَ هٰذَا الْیَوْمِ وَ خَیْرَ مَا بَعْدَهٗ وَ أَعُوْذُ بِکَ مِنْ شَرِّ

هٰذَا الْیَوْمِ وَ شَرِّ مَا بَعْدَهٗ اَللّٰھُمَّ اِنِّی اَعُوْذُ بِکَ مِنَ

الْکَسَلِ وَ الْکِبَرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ. (तबरानी: ह.नं.२९५; २/९२७)

﴾५﴿ सुरज निकलते वक्तकी दुआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ أَقَالَنَا یَوْمَنَا هٰذَا وَلَمْ یُهْلِکْنَا

بِذُنُوبِنَا. (मुस्लीम : १/२७४)

﴿६﴾ कपडे पहेनते वक्त की दुआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ كَسَانِي هٰذَا الثَّوْبَ وَرَزَقَنِيْهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِّنِّيْ وَلَا قُوَّةٍ.

जो शख्स कपडे पहेनते वक्त यह दुआ पढे तो उसके अगले पिछले गुनाह मुआफ हो जाएंगे।

(अबु दावुद : २/५५८)

﴿७﴾ नया कपडा पहेनते वक्त

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ كَسَوْتَنِيْهِ أَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِهٖ وَ خَيْرِ مَا صُنِعَ لَهٗ وَ أَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهٖ وَ شَرِّ مَا صُنِعَ لَهٗ. (अबु दावुद : २/५५८)

﴿८﴾ कपडे निकालते वक्तकी दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ .

रिवायत में है जब तुममें से कोई शख्स कपडे निकालते वक्त यह दुआ पढेगा, तो उसके सतर और जिन्नात और शयातीन की आंखो के दरमियान परदा हो जाएगा। (मुसन्नफ इब्ने अबी शयबह : ह.नं.–३०३५४; १५/३५१)

﴾९﴿ शाम हो तब पढने की दुआ

أَمْسَيْنَا وَ أَمْسَى الْمُلْکُ لِلّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ ، لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لا شَرِيْکَ لَهٗ اَللّٰهُمَّ إِنِّى أَسْئَلُکَ مِنْ خَيْرِ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ وَ خَيْرِ مَا فِيْهَا وَ أَعُوْذُ بِکَ مِنْ شَرِّهَا وَ شَرِّ مَا فِيْهَا. اَللّٰهُمَّ إِنِّىْ أَعُوْذُ بِکَ مِنَ الْکَسَلِ وَ الْهَرَمِ وَ سُوْءِ الْکِبَرِ وَ فِتْنَةِ الدُّنْيَا وَ عَذَابِ الْقَبْرِ.. لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لا شَرِيْکَ لَهٗ لَهُ الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى کُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ.

(मुस्लीम शरीफ : २/३५०)

﴾१०﴿ वुज़ु शुरूअ करते वक्त की दुआ

بِسْمِ اللّٰهُ . (इब्नुस्सुन्नी : ह.नं.२७ पेज नं.१७)

﴾११﴿ वुज़ू के दरमियान की दुआ

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِي ذَنْبِيْ وَ وَسِّعْ لِي فِيْ دَارِي وَ بَارِکْ لِي فِيْ رِزْقِي. (इब्नुस्सुन्नी: १७ اسناده ضعيف)

﴾१२﴿ वुज़ु के बाद की दुआ

سُبْحَانَکَ اللّٰهُمَّ وَ بِحَمْدِکَ، أَشْهَدُ أَنْ لَّآ إِلٰهَ

إِلَّا أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَ أَتُوبُ إِلَيْكَ.

जो यह दुआ पढेगा, तो उस पर एक मोहर लगा दी जाएगी और अर्श के नीचे रख दी जाएगी, और कयामत तक नहीं खोली जाएगी। (तबरानी : ३८८, २/९७५)

﴾१३﴿ वुज़ू के बाद की एक और दुआ

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِي مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِي مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ.

(तबरानी : ३९२, २/९७७)

﴾१४﴿ मस्जिद में दाखील होनेकी दुआ

اَلصَّلَاةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ. اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ ذُنُوْبِيْ وَافْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ.

(तबरानी : ह.नं. ४२४, २/९९२, मुस्लीम : १/२४८)

﴾१५﴿ मस्जिद से निकलते वक्त

اَللّٰهُمَّ إِنِّي أَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ. (मुस्लीम : १/२४८)

﴾१६﴿ अज़ान के वक्तकी दुआ

मुअज़्ज़िन जब ''अशहदु अल्ला इलाह इल्लल्लाह'' या अज़ान का आखरी कलीमह ''लाइलाह इल्लल्लाह'' कहे तब पढे।

أَشْهَدُ أَنْ لَّآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَ أَنَّ

مُحَمَّداً عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ، رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّ بِمُحَمَّدٍ ﷺ رَسُوْلاً وَّ بِالْإِسْلَامِ دِيْنًا.

जो शख्स यह दुआ पढेगा, उसके गुनाह मुआफ हो जाएंगे। (मुस्लीम : १/१६७)

﴾१७﴿ मगरीब की अज़ान के वक्त

اَللّٰهُمَّ إِنَّ هٰذَا إِقْبَالُ لَيْلِكَ وَ إِدْبَارُ نَهَارِكَ وَ أَصْوَاتُ دُعَاتِكَ فَاغْفِرْ لِيْ.

(अबु दावुद : १/७९)

﴾१८﴿ अज़ान के बाद पढने की दुआ

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَ الصَّلٰوةِ الْقَآئِمَةِ اٰتِ مُحَمَّدَ نِ الْوَسِيْلَةَ وَ الْفَضِيْلَةَ وَابْعَثْهُ مَقَاماً مَّحْمُوْدَ نِ الَّذِيْ وَعَدْتَهُ.

(बुखारी श.: १/८६)

नोट: इस दुआ को पढने से पहले दुरूद शरीफ पढ लिया जावे। (इब्नुस्सुन्नी: ह.नं.९३)

﴾१९﴿ सना:

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَ تَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَ لَآ إِلٰهَ غَيْرُكَ.

(तिरमिज़ी : १/५७)

﴿२०﴾ अत्तहिय्यात:

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَ الصَّلَوَاتُ وَ الطَّيِّبَاتُ. اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهُ.اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ. أَشْهَدُ أَنْ لَّآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ.

(बुखारी शरीफ : १/११५)

﴿२१﴾ दुरूद शरीफ:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى إِبْرَاهِيْمَ وَ عَلٰى آلِ إِبْرَاهِيْمَ إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ. اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى إِبْرَاهِيْمَ وَ عَلٰى آلِ إِبْرَاهِيْمَ إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ.

﴿२२﴾ दुरूद शरीफ के बाद की दुआ:

اَللّٰهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ظُلْمًا كَثِيْرًا وَّ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ إِلَّآ أَنْتَ فَاغْفِرْلِي مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ

وَارْحَمْنِي إِنَّكَ أَنْتَ الغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ. (बुखारी : १/११५)

﴿२३﴾ दुआए कुनुत:

اَللّٰهُمَّ إِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَ نَسْتَغْفِرُكَ وَ نُؤْمِنُ بِكَ وَ نَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِي عَلَيْكَ الْخَيْرُ، وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ، اَللّٰهُمَّ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّي وَنَسْجُدُ وَإِلَيْكَ نَسْعٰى وَنَحْفِدُ وَنَرْجُوْ رَحْمَتَكَ وَنَخْشٰى عَذَابَكَ إِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ.

(अस्सुननुल कुबरा लील बयहकी : ३/५३, मामुली फरक के साथ)

﴿२४﴾ फर्ज़ नमाज़ों के बाद की दुआ

اَللّٰهُمَّ أَعِنِّي عَلٰى ذِكْرِكَ وَ شُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ.

हज़. मुआज़ बीन जबल रदी. से रिवायत है के नबीए करीम ﷺ ने मेरा हाथ पकड कर इर्शाद फरमाया, के मुआज़ मुझे तुमसे मुहब्बत है, फिर फरमाया के अय मुआज़ में तुमको ताकीद करता हुं के

तुम किसीभी नमाज़ के बाद यह दुआ मत छोडना। (ज़रूर पढना) (अबु दावुद : ह.नं. १५२२, १/२१३)

﴿२५﴾ फर्ज़ नमाज़ों के बाद की एक और दुआ

اَللّٰهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ.

(कन्जुल उम्माल: ह.नं.४९६८, २/६४२)

﴿२६﴾ घर में दाखील होते वक्त की दुआ

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْئَلُكَ خَيْرَ الْمَوْلَجِ وَ خَيْرَ الْمَخْرَجِ بِسْمِ اللّٰهِ وَلَجْنَا وَعَلَى اللّٰهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا.

(मीश्कात : १/२१५)

﴿२७﴾ घर से निकलने की दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ.

जो शख्स अपने घर से निकलते वक्त यह दुआ पढ ले तो उस से कहा जाता है (अल्लाह तआलाकी तरफ से) तेरे (तवक्कुल की वजह से तेरे बडे बडे) काम हो जाएंगे, (इन्सान और जिन्नात के) शर से तु महफूज़ हो गया। और शयतान उस से दुर हो जाता है।

(तिरमिज़ी : २/१८१)

﴾२८﴿ घर से निकलते वक्त की एक और दुआ

اَللّٰهُمَّ إِنّا نَعُوْذُ بِكَ مِنْ أَنْ نَزِلَّ أَوْ نَضِلَّ أَوْ نَظْلِمَ أَوْ نُظْلَمَ أَوْ نَجْهَلَ أَوْ يُجْهَلَ عَلَيْنَا. (तिरमिज़ी : २/१८१)

﴾२९﴿ खाना खाने से पेहले

بِسْمِ اللّٰهُ (मुस्लीम : २/१७२)

﴾३०﴿ खाना खाने से पहले की दूसरी दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ وَ بَرَكَةِ اللّٰهِ.

(मूस्तदरक : ह.नं. ७१६६; ५/१४६)

﴾३१﴿ खाना खाने के बाद

اَلْحَمْدُ لِلّٰه الَّذِيْ أَطْعَمَنَا وَ سَقَانَا وَ جَعَلَنَا مُسْلِمِيْنْ. (तिरमिज़ी : २/१८४)

﴾३२﴿ खाना खाने के बाद की एक और दुआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰه الَّذِيْ أَطْعَمَنِي هٰذَا وَرَزَقَنِيْهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِّنِّيْ وَ لَا قُوَّةٍ.

जिस शख्सने यह दुआ पढी खाने के बाद तो उसके अगले गुनाह मुआफ हो जाएंगे।

(तिरमिज़ी : २/१८४)

﴾३३﴿ खाना खाने के बाद की एक और दुआ

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهِ وَأَطْعِمْنَا خَيْرًا مِّنْهُ.

(तिरमिज़ी : २/१८३, ह.नं.-३४५५)

﴾३४﴿ पानी पीने के बाद की दुआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ سَقَانَا عَذْبًا فُرَاتًا بِرَحْمَتِهِ وَلَمْ يَجْعَلْهُ مِلْحًا أُجَاجًا بِذُنُوْبِنَا.

(तबरानी : नं-८९९, २/१२१८)

﴾३५﴿ दस्तरख्वान उठाते वक्त की दुआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيْهِ غَيْرَ مَكْفِيٍّ وَّلَا مُوَدَّعٍ وَّلَا مُسْتَغْنًى عَنْهُ رَبَّنَا.

(बुखारी : २/८२०)

﴾३६﴿ दुध पीने के बाद की दुआ

आप ﷺ ने इर्शाद फरमाया जिसको अल्लाह पाक दुध पीलावे वह यह दुआ पढे।

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهِ وَزِدْنَا مِنْهُ.

(तिरमिज़ी : ह.नं. ३४५५ २/१८३)

﴾३७﴿ आइना देखते वक्त की दुआ

اَللّٰهُمَّ كَمَا حَسَّنْتَ خَلْقِيْ فَحَسِّنْ خُلُقِيْ.

(तबरानी : -४०४ २/९८३)

﴿३८﴾ सफरमें जाते वक्त और लोटते वक्तकी दुआ

اَللّٰهُ أَكْبَرُ اَللّٰهُ أَكْبَرُ اَللّٰهُ أَكْبَرُ ......سُبْحَانَ الَّذِيْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَ مَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِيْنَ، وَ إِنَّا إِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ. اَللّٰهُمَّ نَسْئَلُكَ فِيْ سَفَرِنَا هٰذَا الْبِرَّ وَ التَّقْوٰى وَمِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضٰى. اَللّٰهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا هٰذَا وَاطْوِ عَنَّا بُعْدَهُ اَللّٰهُمَّ أَنْتَ الصَّاحِبُ فِي السَّفَرِ وَ الْخَلِيْفَةُ فِي الْاَهْلِ، اَللّٰهُمَّ إِنِّىْ أَعُوْذُ بِكَ مِنْ وَّعْثَاءِ السَّفَرِ وَ كَاٰبَةِ الْمَنْظَرِ وَ سُوْءِ الْمُنْقَلَبِ فِي الْمَالِ وَ الْاَهْلِ.

आप ﷺ सफर के लीये तशरीफ ले जाते तो अपने उंट पर बेठ जाते तब यह दुआ पढते।

और सफरसे लोटते वक्त यह दुआ पढते और साथ में यह दुआ भी बढाते।

آئِبُوْنَ تَآئِبُوْنَ عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ.

(मुस्लीम : १/४३४)

﴿३९﴾ किसी शहरमें दाखील हो तब

أَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ.

जो आदमी किसी बस्ती में उतरे तब यह दुआ पढे, तो वहांसे रवाना होने तक कोई चीज़ उसको नुकसान न पहोंचाएगी। (मुस्लीम : २/३४७)

साथ में यह दुआ भी पढें

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهَا (तीन मरतबह)

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا جَنَاهَا، اَللّٰهُمَّ حَبِّبْنَا إِلٰٓى أَهْلِهَا وَحَبِّبْ صَالِحِىْٓ أَهْلِهَآ إِلَيْنَا.

(हिस्ने हसीन : २६६)

﴾४०﴿ जब मुसीबत पहोंचे

إِنَّا لِلّٰهِ وَ إِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ.

(सुरए बकरहः आ. १५६)

﴾४१﴿ जब छींक आवे

छींक खानेवाला कहे..... اَلْحَمْدُ لِلّٰهُ

जवाबमें सुननेवाला يَـرْحَـمُـكَ اللّٰـهُ कहे....तो छींक खानेवाला इसके जवाबमें कहे

يَهْدِيْكُمُ اللّٰهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ.

(बुखारी : २/९१९)

﴾४२﴿ सोते वक्त पढने की मस्नुन दुआ

بِـاسْـمِـكَ رَبِّـي وَضَـعْـتُ جَنْبِيْ وَبِـكَ اَرْفَعُـهٗ إِنْ

أَمْسَكْتَ نَفْسِيْ فَارْحَمْهَا وَإِنْ أَرْسَلْتَهَا فَاحْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهِ الصَّالِحِيْنَ.

आप ﷺ ने इर्शाद फरमाया जब तुम मेंसे कोई आदमी बिस्तर पर सोने आवे तो अपने बिस्तरको तेहबंद के अंदरूनी किनारे से झटक दे, इसलीये के उसको पता नहीं के कोनसी चीज़ (कोई तकलीफ देह जानवर) उसके पीछे है। फिर यह (यअनी उपरवाली) दुआ पढे। (बुखारी : २/९३५)

﴾४३﴿ सोते वक्त पढने की एक और दुआ

اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ أَمُوْتُ وَأَحْيَا.

आप ﷺ जब रात को बिस्तर पर तशरीफ लाते तो अपना हाथ रूख्सार के नीचे रखते फिर यह (यअनी उपरवाली) दुआ पढते। (बुखारी : २/९३४)

﴾४४﴿ सोते वक्त पढने की एक और दुआ

اَللّٰهُمَّ أَسْلَمْتُ نَفْسِيْ إِلَيْكَ وَوَجَّهْتُ وَجْهِيَ إِلَيْكَ وَ فَوَّضْتُ أَمْرِيْ إِلَيْكَ، وَ اَلْجَئْتُ ظَهْرِيْ إِلَيْكَ رَغْبَةً وَّ رَهْبَةً إِلَيْكَ، لَا مَلْجَأَ وَ لَا مَنْجَا مِنْكَ إِلَّا إِلَيْكَ، اٰمَنْتُ بِكِتَابِكَ الَّذِيْ أَنْزَلْتَ وَ

نَبِیِّکَ الَّذِيْ أَرْسَلْتَ.

आप ﷺ जब अपने बिस्तर पर तशरीफ लाते तो दाहनी करवट पर लेट कर यह दुआ पढते। फरमाया जिस शख्सने यह दुआ पढली, और उसी रात उसका इन्तेकाल हो गया तो गोया वह फीतरत पर मरा। (यअनी इस्लाम पर मरा) (बुखारी : २/९३४)

﴾४५﴿ बाज़ार में दाखील होने की दुआ

لَآ إِلٰـــهَ إِلَّا الـلّٰـهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْکَ لَهٗ لَهُ الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ.

जो शख्स यह दुआ पढेगा अल्लाह तआला उसके लिये दस लाख नेंकीया लीख देते है और दस लाख गुनाह मुआफ फरमाते है और जन्नतमें एक घर बना देते है। (तिरमिज़ी : २/१८१)

﴾४६﴿ खाना शुरूअ करते वक्त बिस्मील्लाह भुल गया तो यह पढे

بِسْمِ اللّٰهِ أَوَّلَهٗ وَ أٰخِرَهٗ.

(इब्नुस्सुन्नी : ह.नं. ४५९, : पेज नं. १४४)

﴾४७﴿ दअवत खा कर यह दुआ पढे।

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِيمَا رَزَقْتَهُمْ وَاغْفِرْ لَهُمْ وَارْحَمْهُمْ.

(तबरानी : ९२०, २/१२३० मुस्लीम : २०४२)

﴾४८﴿ इफतार के वक्त की दुआ

ذَهَبَ الظَّمَأُ وَابْتَلَّتِ الْعُرُوْقُ وَ ثَبَتَ الْأَجْرُ إِنْ شَآءَ اللّٰهُ.

(हिस्नुल मुसलीम: १०८)

﴾४९﴿ किसीके यहां इफतार के वक्त पढने की दुआ

أَفْطَرَعِنْدَكُمُ الصَّائِمُوْنَ وَأَكَلَ طَعَامَكُمُ الْأَبْرَارُ وَصَلَّتْ عَلَيْكُمُ الْمَلآئِكَةُ.

(मुस्नदे बज़्ज़ार ह.नं. ७२६८, १३/४७४)

﴾५०﴿ मोसम का नया फल देखने के वक्त पढने की दुआ

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْ ثِمَارِنَا ، وَبَارِكْ لَنَا فِيْ مَدِيْنَتِنَا وَ بَارِكْ لَنَا فِيْ صَاعِنَاوَ مُدِّنَا.

(तिरमिज़ी: २/१८३)

﴾५१﴿ मरीज़ की इयादत के वक्त पढने की दुआ

لَا بَأْسَ طَهُوْرٌ إِنْ شَآءَ اللّٰهُ.

(हिस्नुल मुसलीम: ९३)

﴾५२﴿ मरीज़ की इयादत के वक्त पढने की एक और दुआ

इस दुआ को मरीज़ के सामने सात मरतबह पढे।

أَسْأَلُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ أَنْ يَّشْفِيَكَ.

(अबुदावुद: २/४४२)

﴾५३﴿ नया चांद देखे

اَللّٰهُمَّ أَهِلَّهُ عَلَيْنَا بِالْيُمْنِ وَالْإِيْمَانِ وَ السَّلَامَةِ وَ الْإِسْلَامِ رَبِّي وَ رَبُّكَ اللّٰهُ.

(तिरमिज़ी : २/१८३)

﴾५४﴿ रजब का चांद देखने के वक्त की दुआ

जब रजब का महीना शुरू होता तो अल्लाह के रसूल ﷺ यह दुआ मांगा करते थे।

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْ رَجَبَ وَ شَعْبَانَ وَ بَلِّغْنَا رَمَضَانَ.

(मुस्नदे बज़्ज़ार: ह.नं.६४९६; १३/११६)

﴾५५﴿ बारिश के वक्त की दुआ

اَللّٰهُمَّ صَيِّبًا هَنِيْئًا.

(अबु दावुद : २/६९५)

﴾५६﴿ जब बादल गरजे

اَللّٰهُمَّ لَا تَقْتُلْنَا بِغَضَبِكَ وَ لَا تُهْلِكْنَا بِعَذَابِكَ وَ

عَافِنا قَبْلَ ذَالِکَ.
(तिरमिज़ी : २/१८३)

﴿५७﴾ बिजली से हीफाज़त की दुआ

سُبْحَانَ الَّذِيْ يُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَ الْمَلٰئِكَةُ مِنْ خِيفَتِهٖ.
(मुअत्ता मालीक हिन्दी नुस्खा : ५२५)

﴿५८﴾ अगर बारिश न होती हो

اَللّٰهُمَّ أَغِثْنَا اَللّٰهُمَّ أَغِثْنَا اَللّٰهُمَّ أَغِثْنَا.
(मुस्लीम : १/२९३)

﴿५९﴾ जब अपनी बस्तीमें बारिश बहुत ज्यादा हो जावे और करीबकी बस्तीयोंमें बारिश न होती हो।

اَللّٰهُمَّ حَوَالَيْنَا وَ لَا عَلَيْنَا اَللّٰهُمَّ عَلَى الْآكَامِ وَ الظِّرَابِ وَ بُطُوْنِ الْأَوْدِيَةِ وَ مَنَابِتِ الشَّجَرِ.
(मुस्लीम शरीफ: १/२९४)

﴿६०﴾ जब किसीको रूख्सत करे तो यह दुआ पढे

أَسْتَوْدِعُ اللّٰهَ دِيْنَکَ وَ أَمَانَتَکَ وَ خَوَاتِيْمَ عَمَلِکَ.
(तिरमिज़ी: २/१८२)